1 तीमुथियुस

लेखकः

पौलुस, जो यीशु मसीह का एक शिष्य था।

समयः

लगभग 64 ए.डी. के आस पास

विषयः

इस पत्र के लिखे जाने के समय चर्च की संख्या काफ़ी बढ़ चुकी थी। इसलिए मसीह के मानने वालों के उचित व्यवहार, अनुशासन और नेतृत्व के बारे में तमाम प्रश्न उठ रहे थे। इस सम्बन्ध में पौलुस ने तीमु. को दो पत्र और तीतुस को एक पत्र लिखा था। वह यीशु मसीह का प्रेरित था और उसने यीशु मसीह के अधिकार के साथ पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा था।

1 पौलुस की ओर से, जो हमारे मुक्तिदाता
परमेश्वर और हमारी आशा मसीह यीशु
की आज्ञा से मसीह यीशु का प्रेरित है,

2तीमुथियुस के, नाम जो विश्वास में
मेरा सच्चा बेटा है, पिता परमेश्वर और
हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुम्हें
असीम कृपा (अनुग्रह), दया, और शान्ति
मिलती रहे।

3मैंने मकिदुनिया को जाते समय तुम्हें
समझाया था कि इफ़िसुस में रह कर कुछ
लोगों को आज्ञा दो, कि वे दूसरी कोई
शिक्षा (सिद्धान्त) न सिखाएँ। 4उन ऐसी झूठी
कहानियों और अनगिनित वंशावलियों पर
अपना ध्यान न लगाएँ, जिनसे झगड़े होते हैं,
जो परमेश्वर की उस योजना के अनुसार नहीं
हैं, जो विश्वास से सम्बन्ध रखती हैं। 5आज्ञा
का मकसद् (उद्देश्य) यह है कि शुद्ध मन,
अच्छे विवेक और कपट रहित विश्वास

1:1 "मुक्तिदाता"- यहाँ पौलुस कहता है कि परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता हैं। (तीतुस 2:13) और दूसरे स्थानों में वह कहता है कि यीशु हमारे उद्धारकर्ता हैं। एक बार फिर से क्या यह इस बात का सबूत नहीं कि यीशु मसीह परमेश्वर हैं? यशा. 44:11 देखें। अन्य पदों को देखें जिनसे यह मालूम होता है कि यीशु परमेश्वर हैं (फ़िलि. 2:6)।

"आशा"- विश्वासी के अन्तिम उद्धार के आश्वासन का एक मात्र आधार मसीह ही है। (कुल. 1:26; रोमि. 5:2)।

"प्रेरित"- रोमि. 1:1; गल. 1:1.

1:2 "तीमुथियुस"- प्रे.काम 16:1.

"बेटा"- आत्मिक पुत्र न कि देह का।

"हमारे प्रभु"- लूका 2:11; फ़िलि. 2:10-11 के नोट्स देखें।

"असीम कृपा"- साधारणतया पौलुस 'अनुग्रह और शान्ति' (रोमि. 1:7 आदि) लिखता है। केवल तीमुथियुस को लिखे दो पत्र और तीतुस को लिखे पत्र में वह शब्द दया को जोड़ देता है। मसीह की सेवा में तीमुथियुस और तीतुस दोनों पूरे समय लगे हुए थे। क्या दूसरों की तुलना में इन लोगों को दया की अधिक आवश्यकता है? याकूब 3:1 देखें।

1:3 इस से यह मालूम होता है कि तीमुथियुस इफ़िसुस के चर्च में अगुवा था और शायद मुख्य अगुवा था (चर्च सम्बन्धित बातों के विषय में वह केवल इसी को लिखता है)। उसे इस बात का अधिकार था कि वह चर्च में गलत शिक्षा को मना करे। "कोई और शिक्षा" का मतलब उस शिक्षा से है, जो मसीह द्वारा प्रेरितों पर प्रगट किए गए सत्य के विरोध में थी। जो अधिकार परमेश्वर ने प्रेरितों को दिया था, उसके कारण प्रेरितों ने इस सत्य को सिखाया था। इस पर विश्वास करना सभी विश्वासियों के लिये ज़रूरी भी था (4:16; गल. 1:6-12; रोमि. 6:17 और यहूदा 3 से तुलना करें)।

परमेश्वर ने पासबानों और अगुवों को ठहराया है कि वे चर्च की देखभाल करें (प्रे. काम 20:28-31)। उनको उस परमेश्वर के सत्य के विरोध में जो उन्हें सिखाने के लिये दिया है, इजाज़त नहीं देनी चाहिए। यदि वे देते हैं तो विश्वास के प्रति गद्दार हैं, जिससे कलीसियाओं को बड़ी हानि होती है। जिस प्रकार उस समय के विश्वासी, प्रेरितों की शिक्षा के प्रति समर्पित थे, आज के मसीहियों को समर्पित होना चाहिए (प्रे. काम 2:42)। तीतुस और तीमुथियुस को लिखे गए तीन खतों में सही सिद्धान्तों और शिक्षा पर ज़ोर डाला गया है - पद 10; 4:6,13,16; 5:17; 6:1,3; 2 तीमु. 3:10,16; 4:2-3; तीतुस 1:9; 2:1,7,10 देखें।

1:4 "कहानियों और अनगिनित वंशावलियों"- ऐसी खोखली कहानियाँ और वंशावलियाँ (शायद यहूदी) जो कि बाईबल में नहीं हैं उनकी ओर पौलुस इशारा कर रहा है। तीतुस 1:14 से तुलना करें। ऐसी शिक्षाएँ पृथ्वी पर परमेश्वर के काम के लिये मददगार नहीं हैं। परमेश्वर का कार्य केवल उन्हीं लोगों के द्वारा हो सकता है, जो उनके वचन पर विश्वास करते हैं और दूसरों को उनके विषय में सिखाते हैं।

1:5 "शुद्ध मन"- मत्ती 5:8; 1 पतर. 1:22.

"अच्छे विवेक"- पद 19; 3:9; प्रे.काम 23:1; 24:16. 4:2 से तुलना करें।

"निष्कपट विश्वास"- गल. 5:6; 1 कुरि. 2:4-5. यह बहाना बनाने वाले विश्वास से फ़र्क है जो कपटी लोगों के पास होता है। पौलुस के अनुसार इन तीनों बातों के बगैर, जैसा प्रेम होना चाहिए, नहीं होगा। यहाँ तक कि उसे प्रेम कहना भी उचित नहीं।

से प्रेम उत्पन्न हो। 6इन को छोड़कर कई लोग फिरकर बेकार की बातों में भटक गए हैं। 7वे धार्मिक शिक्षक (नियमशास्त्र के सिखाने वाले) तो बनना चाहते हैं, परन्तु जो बातें कहते और जिन पर जोर डालकर बोलते हैं, उनको समझते भी नहीं।

8लेकिन हम जानते हैं कि यदि कोई नियम शास्त्र (व्यवस्था) को सही तरीके से काम में लाए, तो यह भला है। 9यह जानकर कि नियमशास्त्र विश्वासी (सज़ामुक्त ठहराए व्यक्ति) के लिए नहीं, परन्तु अधर्मियों, मनमाना आचरण करने वालों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्र और अशुद्ध लोगों, माँ-बाप की हत्या करने वालों, हत्यारों, 10व्याभिचारियों, पुरुषगामियों, मनुष्य के बेचने वालों, झूठों, और झूठी शपथ खाने वालों, और इन को छोड़ खरे संदेश के सब विरोधियों के लिए ठहराया गया है। 11यही धन्यवाद के योग्य परमेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है, जो मुझे सुपुर्द किया गया है।

12मैं अपने प्रभु मसीह यीशु का जिन्होंने मुझे योग्यता दी है, धन्यवाद करता हूँ

"प्रेम"- पौलुस उस यूनानी शब्द का उपयोग करता है जिसे परमेश्वर अपने लोगों से चाहते हैं और उन्हें देते हैं ('अगापे' 1 कुरि. 13:1)। प्रत्येक विश्वासी का यह मकसद होना चाहिए कि वह ऐसा प्रेम करे जैसा मसीह ने किया (यूहन्ना 13:34 आदि)। यह सिर्फ़ मनुष्य की भावना नहीं है, न ही इसका सम्बन्ध अशुद्धता या स्वार्थ की इच्छा से है।

1:6 पाँचवें पद में हमें मसीही विश्वास की मुख्य बात दिखती है जिसे परमेश्वर चाहते हैं कि उसके लोग अनुभव करें। यह खेद की बात है कि आज बहुत से वे मसीही, जो मसीही होने का दावा करते हैं, बेकार बातों की ओर मुड़ते हैं, और इन खास बातों को हल्का-फुल्का समझते हैं।

1:7 "धार्मिक...हैं"- वे मनुष्यों के द्वारा इज़्ज़त चाहते हैं। मत्ती 23:5-12; अय्यूब 3:1. वे आत्मिक सच्चाई से अनजान हैं किन्तु चाहते यह हैं कि दूसरे लोग उन्हें बुद्धिमान समझें। कुछ लोग कितने आत्मविश्वास और साहस से उन विषयों के सम्बन्ध में बोलते हैं, जिनके बारे में उन्हें बहुत कम ज्ञान है।

1:8 "नियम भले हैं"- रोमि. 7:12. यह लोगों के लाभ के लिये परमेश्वर द्वारा दी गई है। यहाँ नियम का अर्थ है वह रीति, नियम या विधियाँ जो मूसा द्वारा दिए गए हैं (निर्ग. अध्याय 2)। वे भले हैं, किन्तु उद्धार का मार्ग नहीं हैं, न ही वे पवित्र जीवन के लिये बल प्रदान करते हैं। लोगों के मुँह बंद करने के लिये परमेश्वर इसका उपयोग करते हैं (रोमि. 3:19-20)। उन्हें यह महसूस कराने के लिये मी कि उन्हें यीशु की माफ़ करने वाले के रूप में ज़रूरत है (गल. 3:24-25)।

1:9-10 "विश्वासी"- पौलुस उन लोगों की ओर इशारा करता है जो मसीह में विश्वासी हैं और परमेश्वर की इच्छानुसार जीते हैं। उन्हें नियमशास्त्र की आवश्यकता नहीं कि वह उन्हें कायल करे, रोके, या दण्ड दे। जैसा परमेश्वर चाहते हैं, वे भी चाहते हैं कि नियमशास्त्र की धार्मिकता उन में पूरी हो (रोमि. 8:4)। दुष्ट व्यक्ति की बात अलग है।

1:10 "खरे संदेश"- पद 3.

1:11 यह देखें कि खरे उपदेश से उसका मतलब क्या है। सही शिक्षा मसीह के सन्देश की पुष्टि करेगी, गलत शिक्षा इसके विपरीत होगी।

"धन्यवाद के योग्य परमेश्वर"- 6:15 असीमित मात्रा में उनके पास शान्ति, आनन्द और पवित्रता आदि है, जो वह चाहते हैं कि लोग मसीह में अनुभव करें।

"महिमा के उस सुसमाचार"- 2 कुरि. 4:4 से तुलना करें। मरकुस 1:1; 1 कुरि. 15:1-8 में सुसमाचार पर नोट्स देखें।

"जो मुझे"- 1 कुरि. 9:17; गल. 2:7.

1:12-17 पौलुस बताता है कि महिमा के सुसन्देश ने उसके जीवन में कैसे कार्य किया, और शुक्रगुजारी एवं बड़ाई उस परमेश्वर को देता है जिनका सुसमाचार यह है। वह अपने जीवन में जानता था कि सुसमाचार मुक्ति के लिये परमेश्वर की शक्ति है। रोमि. 1:16. उसने वह सत्य दूसरों को बताने का प्रयत्न नहीं किया, जिसका स्वयं उसने अनुभव नहीं किया था (जैसे कुछ लोग करते हैं)।

1:12 "मैं...धन्यवाद करता हूँ"- इफ़ि. 5:20; 1 थिस्स. 5:18. भजन 7:17; 50:14-15; 56:12; लैव्य. 7:12-13. शान्ति - कुल. 1:11,29; फ़िलि. 4:13; इफ़ि. 3:16; 6:10; 2 कुरि. 12:9-10.

कि उन्हों ने मुझे भरोसेमन्द समझकर अपनी सेवा के लिए ठहराया। 13मैं तो पहले निन्दा करने वाला, सताने वाला, और अन्याय करने वाला था, तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैंने मात्र धार्मिक जोश में बिना-समझे-बूझे, अज्ञानता के साथ ये काम किए थे। 14हमारे प्रभु महान् की कृपा उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, मुझ पर बहुतायत से हुई।

15यह बात सच और हर प्रकार से स्वीकार करने के योग्य है कि मसीह यीशु अपराधियों को मुक्ति देने के लिए दुनिया में आए, जिनमें सब से बड़ा मैं हूँ। 16परन्तु मुझ पर इसलिए दया हुई कि मुझ सब से बड़े अपराधी में यीशु मसीह अपनी

"भरोसेमन्द"- इसका अर्थ है कि मसीह ने पहले ही से जान लिया था कि प्रेरित पौलुस नियुक्त किया जाएगा और विश्वसनीय होगा। जो लोग मसीह की सेवा करते हैं, उनके विश्वसनीय होने के बारे में बाईबल काफ़ी ज़ोर डालती है (मत्ती 24:45; 25:21; लूका 16:10-12; 1 कुरि. 4:2)। हर तरह की बेईमानी और गद्दारी मसीह के नाम पर कलंक है।

1:13 "निन्दा करने वाला"- उसने इस बात से इन्कार किया था कि यीशु उद्धारकर्ता और परमेश्वर के पुत्र थे और यह परमेश्वर की निन्दा थी (मत्ती 9:3 के नोट्स देखें)।

"सताने वाला"- प्रे.काम 8:1-3; 9:1-2; 22:4-5; 1 कुरि. 15:9-10; गल. 1:13; फ़िलि. 3:6.

"अन्धेर करने वाला"- यूनानी शब्द एक गुस्सैल और उद्दण्डी व्यक्ति की ओर संकेत करता है जो शब्द या कार्य द्वारा या दोनों ही तरह दूसरों को नुकसान पहुँचाना चाहता है।

"मुझ पर दया हुई"- उसे दया की ही आवश्यकता थी और प्रत्येक व्यक्ति को भी है (लूका 18:13; रोमि. 3:9,19; तीतुस 3:3-5) और वह सब कुछ जो वह देने में आनन्दित होता है (रोमि. 11:32; इफ़ि. 2:4; मीका 7:8)।

"अज्ञानता की दशा में बिना समझे बूझे"- प्रे. काम 26:9; और 23:1 देखें। वह सोचता था कि मसीहियों को सताने में वह अच्छा काम कर रहा था। (यूहन्ना 16:2 से तुलना करें)। वह जानबूझ कर उस ज्ञान का इन्कार नहीं कर रहा था जिसे परमेश्वर ने उसे दिया था। जब लोग जानबूझ कर और जानते बूझते मसीह के महान सन्देश का तिरस्कार करते हैं, वे अपने आप को दया के दायरे से बाहर जाने के खतरे में डाल देते हैं (मत्ती 12:22-34; इब्रा. 2:2-3; 6:4-8; 10:26-31; 12:25-29; नीति. 1:22-33 से तुलना करें)।

1:14 "महान कृपा"- यूहन्ना 1:14,16; रोमि. 1:7; 2 कुरि. 8:9.

"बहुतायत से हुयी"- रोमि. 5:20-21. विश्वास और प्रेम मसीह में है। उनकी कृपा उन्हें मनुष्यों के पास लाती है। जब हम उन से एक हो जाते हैं, तभी सचमुच में सुसमाचार पर विश्वास करते हैं और उन से प्रेम करते हैं। यह सभी मसीह द्वारा प्राप्त वरदान हैं (फ़िलि. 1:29; गल. 2:8; गल. 5:22; रोमि. 5:5)।

1:15 "हर प्रकार...योग्य"- 3:1; 4:9; 2 तीमु. 2:11; तीतुस 3:8.

"मसीह...आए"- उनका नाश करने नहीं - मत्ती 1:1; 9:13; लूका 19:10; यूहन्ना 6:51; रोमि. 5:8. हम सभी गुनाहगार हैं (रोमि. 3:9,19,23)। यदि मसीह संसार में न आते तो लोगों के लिये मुक्ति कभी भी संभव नहीं थी (प्रे.काम 4:12)।

"सब से बड़ा मैं हूँ"- इफ़ि. 3:8. पौलुस अपने समय में महान व्यक्ति था। इन पदों में वह अपने बारे में बताता है। पौलुस यह नहीं कह रहा है कि वह अधर्म में लौट रहा है, और दूसरों की तुलना में अधिक बुराई कर रहा है। वह यह बताने का प्रयत्न कर रहा था कि जन्म से ही उसमें बुरा स्वभाव है। (गल. 5:16-17; रोमि. 7:16-17) उसे मालूम था कि पुराने समय में इस दुष्ट स्वभाव ने उसे क्या-क्या करने पर मज़बूर किया था। वह यह भी जानता था कि बहुतायत की कृपा ही उसे मुक्ति दे सकती है, और अन्त तक बचाए रख सकती है। हम अपने बारे में क्या सोचते हैं? इस सवाल का उत्तर बहुत आवश्यक है। (लूका 18:9-14 से तुलना करें)।

1:16 पौलुस जो कि सभी बुरे लोगों का मुखिया था, उस पर दया दिखाकर और उसे बचाकर मसीह ने यह दिखा दिया कि वह एक दुष्ट व्यक्ति को भी बचा सकते हैं। किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि बहुत बुरा है और मसीह की दया एवं शक्ति से परे है।

पूरी सहनशीलता दिखाएँ, ताकि जो लोग उन (यीशु मसीह) पर अनन्त जीवन के लिए विश्वास करेंगे, उनके लिए मैं एक नमूना बनूँ। 17अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी, अनदेखे और बुद्धिमान परमेश्वर का आदर और महिमा आने वाले सभी युगों तक होता रहे। ऐसा ही हो।

18हे बेटे, तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहले तुम्हारे विषय में की गयीं थीं, तुम्हारे लिए मेरा आदेश यह है कि तुम उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ते रहो, 19और विश्वास और उस अच्छे विवेक को संभाल कर रखो, जिसे दूर करने की वजह से कितनों का विश्वास रूपी जहाज़ डूब गया। 20उन्हीं में से हिमुनयुस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैंने शैतान के सुपुर्द कर दिया है, कि उन्हें परमेश्वर की निन्दा न करने का पाठ सिखाया जाए।

2 अब मैं सब से पहले यह बिनती करता हूँ कि बिनती, प्रार्थना, निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए किए जाएँ।

"पूरी सहनशीलता"- 2 पतर. 3:9,15. यदि मसीह दुष्ट, निर्बल, मूर्ख लोगों के साथ धीरज नहीं रखते, तो कोई भी बच नहीं सकता था।

"अनन्त जीवन"- यूहन्ना 3:15-16. मसीह पर विश्वास करने के द्वारा हम इसे प्राप्त कर सकते हैं। यूहन्ना 1:12-13; 3:36.

"नमूना"-परमेश्वर लोगों को कैसे बुलाते हैं इसका पौलुस नमूना था। मुक्ति पाने के लिये जैसे पौलुस ने प्रकाश देखा, सभी को देखने की ज़रूरत नहीं। किन्तु हम सभी को वह दया और कृपा प्राप्त करने की आवश्यकता है, जो उसने हासिल की।

1:17 "सनातन"- 6:16; रोमि. 1:23.

"राजा"- भजन 10:16; 24:10; 45:1; 47:2; प्रका. 19:16.

"अनदेखे"- यूहन्ना 1:18.

"बुद्धिमान"- रोमि. 11:33; 16:27; 1 कुरि. 1:25; कुल. 2:2-3; यहूदा 25.

"महिमा"- लोगों को उनके पापों से बचाने के लिये मात्र एक सच्चे परमेश्वर को आदर प्रशंसा मिलेगी। पौलुस यही चाहता भी था कि केवल परमेश्वर को आदर मिले। इफ़ि. 1:6,12,14; 2:9 से तुलना करें।

1:18 "भविष्यद्वाणियों"- रोमि. 12:6; 1 कुरि. 12:28; 14:3. यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने जब तीमुथियुस को सेवा के लिये बुलाया, तब परमेश्वर ने पौलुस को यह योग्यता दी (या दूसरे भविष्यद्वाणी करने वाले को) ताकि वह परमेश्वर की बुलाहट को समझे और उसे बताए। प्रे.काम 13:1-2 से तुलना करें।

"अच्छी लड़ाई लड़ता रहे"- 6:12; 2 तीमु. 4:7; इफ़ि. 6:11.

1:19 पद 5. यहाँ विवेक और विश्वास का सम्बन्ध देखें। अर्थात् विश्वास एवं बुराई से बचाव के बीच। अच्छा विवेक पाने का एक तरीका है, उन बातों को करने से इन्कार करना, जो विवेक मना करता है।

"विश्वास रूपी जहाज डूब गया"- 'उनका' विश्वास नहीं, यूनानी में 'उनका' शब्द नहीं है। विश्वास मसीही सच्चाई का वह भाग है जिसे परमेश्वर ने प्रगट किया और प्रेरितों ने सिखाया। किसी भी हालत में सच्चे विश्वासियों का विश्वास रूपी जहाज डूबता नहीं है। इब्रा. 10:39; लूका 22:31-32; यूहन्ना 10:27. परन्तु वे लोग जो मसीही होने का दावा करते हैं, वे विश्वास की शिक्षाओं के जहाज को डुबाकर गलत शिक्षा में फँस सकते हैं।

1:20 पौलुस ने उन लोगों के नाम लेने में हिचकिचाहट नहीं दिखायी, जब उसने जान लिया कि कलीसियाओं को चेतावनी देना आवश्यक है। 2 तीमु. 2:17; 4:14-15 भी देखें।

"मैंने शैतान के सुपुर्द कर दिया"- 1 कुरि. 5:4-5 से तुलना करें। शैतान के विषय में 1 इति. 21:10; मत्ती 4:1-10:; यूहन्ना 8:44 आदि पर नोट्स देखें। मत्ती भजन 10:16 में निन्दा पर नोट्स देखें।

2:1 "बिनती, प्रार्थना, निवेदन"- इफ़ि. 6:18; फ़िलि. 4:6; 1 थिस्स. 5:17 में प्रार्थना (दुआ) पर और पद देखें।

"धन्यवाद"- इफ़ि. 5:20; कुल. 1:12; 2:7; 3:16; 4:2; 1 थिस्स. 5:18; लैव्य. 7:12-13; भजन 7:17; 50:14-15; 56:12 आदि।

"सब मनुष्यों"- हमारी दुआएँ हमारे रिश्तेदारों और मित्रों के छोटे से घेरे तक सीमित नहीं रहनी चाहिए।

2राजाओं (नेताओं), अधिकारियों और सब ऊँचे पद वालों के लिए इसलिए कि हम शान्तिपूर्वक और चैन के साथ सारी भक्ति और परमेश्वर के प्रति भय युक्त आदर के साथ जीवन बिता सकें। 3यह हमारे मुक्तिदाता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है, 4वह यह चाहते हैं कि सब मनुष्यों को मुक्ति मिले और वे सच्चाई को अच्छी तरह पहचान लें। 5क्योंकि परमेश्वर एक ही हैं, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचौलिया (मध्यस्थ) हैं, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य बने, 6जिन्होंने अपने आपको सब के छुटकारे के दाम में दे दिया, और इसकी गवाही सही समय पर दी गयी।

7मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, कि मैं इसी लिए संदेश देने वाला, प्रेरित, अन्यजातियों के लिए ईमान (विश्वास) और सच्चाई का उपदेशक ठहराया गया।

8इसलिए मैं चाहता हूँ कि हर कहीं मनुष्य बिना गुस्से और विवाद के पवित्र हाथों

2:2 पौलुस कहता है कि शासकों की आलोचना नहीं, उनके लिये प्रार्थना करो। वह यह संकेत करता है कि मसीही विश्वासियों की दुआएँ एक देश को प्रभावित कर सकती हैं। यह तब भी सच है जब कि अधिकारी मसीह को मानने वाले नहीं हैं, यहाँ तक कि विरोधी भी हो सकते हैं। (ऐसा पौलुस के दिनों में हुआ करता था)। शायद कुछ देशों में विश्वासियों के शान्ति से न रहने का कारण यह है कि जैसा करना चाहिए, वे अपने अधिकारियों के लिये प्रार्थना नहीं करते।

2:3 मुक्ति पाए हुए और न पाए हुए लोगों के लिये दुआ करने से परमेश्वर खुश होते हैं। जिन बातों से परमेश्वर खुश होते हैं, विश्वासियों को वे ही बातें करनी चाहिए।

2:4 दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति के प्रति परमेश्वरीय दृष्टिकोण का यहाँ एक स्पष्ट कथन है। वह चाहते हैं कि मसीह के बारे में सच्चाई प्रत्येक व्यक्ति जाने और मुक्ति प्राप्त करे। 4:10; यूहन्ना 1:29; 3:16; रोमि. 11:32; 2 कुरि. 5:19; 2 पतर. 3:9; 1 यूहन्ना 2:1; यहेज. 18:32; 1 यूहन्ना 4:8; मत्ती 23:37; यूहन्ना 3:19-20; 5:40; 2 थिस्स. 2:10-12; रोमि. 8:29 के नोट्स देखें।

2:5 "परमेश्वर एक ही हैं"- 1:17; 1 कुरि. 8:6; इफ़ि. 4:6; यशा. 44:6,8; 45:12. दूसरे स्थानों पर पौलुस ने सिखाया था कि मसीह त्रिएकत्व के एक व्यक्ति हैं। रोमि. 9:5; फ़िलि. 2:6,11; कुल. 1:15; 2:9; तीतुस 2:13. वह सत्य का खंडन नहीं कर रहा है; किन्तु यहाँ पर मसीह के इन्सान होने, देह में आने की बात कर रहा है। (यूहन्ना 1:14; फ़िलि. 2:7-8; इब्रा. 2:14,17)।

"बिचौलिया"- नए नियम में यह पद केवल यहीं और इब्रा. 8:6; 9:15; 12:24, में उपयोग किया गया है। यही सत्य सभी स्थानों में अलग शब्दों में है। यूहन्ना 14:6,13,14; रोमि. 5:1-2; इफ़ि. 2:18; इब्रा. 4:14-16; 7:25; 10:19-22; 13:15; 1 यूहन्ना 2:1. इसलिए कि यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों ही हैं, वह दोनों ही को समझते हैं और दोनों ही पर अपने हाथ रख सकते हैं, और जिस प्रकार के मध्यस्थ की कामना अय्यूब ने की थी, वह हो सकते हैं। (अय्यूब 9:32-35)। कोई भी दूसरा व्यक्ति, संत या ईश्वर, परमेश्वर और इन्सान के बीच मध्यस्थ नहीं हो सकता। इसलिए कि यीशु सिद्ध बिचवई हैं, किसी दूसरे की ज़रूरत नहीं है। यदि मसीही विश्वासी और सभी मनुष्य इस बात को मान लेते, तो इस पृथ्वी पर एक बड़ा फ़र्क होता।

2:6 "सब के"- मसीह सभी लोगों के लिये दाम भर चुके हैं और संपूर्ण संसार के छुटकारे के लिये उन्हों ने कीमत चुकाया है। जब लोग बिना उद्धार के मरते हैं, तब यह उनका दोष है, प्रभु यीशु का नहीं।

"छुटकारे के दाम"- मत्ती 20:28; रोमि. 3:24-25; गल. 1:4.

"सही समय"- गल. 4:4.

2:7 "अन्यजातियों"- गल. 2:7-8;।

"ठहराया गया"- एक बार फिर से पौलुस इस सत्य पर ज़ोर डालता है कि इस कार्य के लिये परमेश्वर ने उसे बुलाया है ताकि वह सत्य सिखाए। गल. 1:11-12.

2:8 "विवाद(सन्देह)"- यूनानी शब्द 'तर्क करने' या 'हिचकिचाते हुए प्रश्न करने' को दर्शाता है - याकूब 1:6-8.

"पवित्र हाथों"- भजन 26:6; यशा. 1:15; याकूब 4:8 से तुलना करें। यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थना का उत्तर दें, तो निश्चित करें कि हम किसी पाप को तो पकड़े हुए नहीं हैं। परमेश्वर की ओर अशुद्ध हाथों को उठाना उसकी बेइज़्ज़ती करना है। दूसरों के प्रति क्रोध हमारी प्रार्थनाओं में रुकावट लाता है। मत्ती 6:12,14,15; इफ़ि. 4:23,31,32; कुल. 3:13,15; याकूब 1:6-8 से तुलना करें।

को उठाकर प्रार्थना किया करें।
9वैसे ही स्त्रियाँ भी शालीनता और संयम
के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को
संवारे, न कि बाल गूंथने, और सोने, और
मोतियों, और कीमती कपड़ों से, लेकिन
भले कामों से अपने आप को सज़ाएँ।
10जो महिलाएँ स्वयं को धर्मी और भले
काम करने वाली समझती हैं उनको यह
वाजिब भी है।
11महिलाओं को चुपचाप पूरी आधीनता
से सीखना चाहिए। 12मैं यह भी कहता हूँ
कि महिलाएँ न उपदेश करें, और न पुरुष
पर आज्ञा चलाएँ, परन्तु चुपचाप रहें।
13क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा
बनाई गई। 14और आदम बहकाया न गया,
परन्तु स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी
हुई। 15लेकिन यदि वे (स्त्रियाँ) संयम
सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में

"पवित्र हाथों को उठाकर"- यहूदी और दूसरी जाति के लोगों की हाथों को उठाकर प्रार्थना करने की रीति सामान्य थी। पौलुस यह नहीं कहना चाहता कि किसी विशेष स्थिति में प्रार्थना करने में कोई विशेषता है। मत्ती 14:19; 26:39; लूका 18:13; यूहन्ना 17:1; प्रे.काम 1:14; की तुलना 2:1; 20:36 से करें।

2:9-10 क्या परमेश्वर को इस से कुछ लेना-देना है कि स्त्रियाँ कपड़े किस प्रकार पहनती हैं? निश्चित रीति से, इसलिए उसने पौलुस को उभारा कि वह इस प्रकार लिखे। यशा. 3:16-23 से तुलना करें। 1 पतर. 3:3-4 भी देखें। जो स्त्रियाँ विश्वासी हैं, उनको ठीक से वस्त्र पहनने चाहिए क्योंकि यह आवश्यक नहीं कि वे संसारिक स्त्रियों की नकल करें ताकि लोग उन्हें देखें या पुरुष उनकी ओर आकर्षित हों। वे ऐसे संसार में रहती हैं जहाँ गरीब और मोहताज बिना समुचित भोजन और वस्त्रों के हैं। उनके प्रभु और उद्धारकर्ता ने (मत्ती 9:20; 2 कुरि. 8:9) उन्हें ऐसे जीवन के लिये बुलाया है जिसमें स्वयं से इन्कार है, न कि स्वार्थ - मत्ती 10:38-39; लूका 14:33.

गरीबों को धन देना या बाईबल सिखाने के लिये धन लगाना अधिक बेहतर है, बजाए सोने के गहने और कीमती कपड़ों में खर्च करना। परमेश्वर चाहते हैं कि मसीह को मानने वाले पुरुष और स्त्री नम्र, शालीन और सन्तोष रखने वाले हों (6:6-8) और पृथ्वी पर ढेर धन इकट्ठा करने के बजाए स्वर्ग में धन रखें (मत्ती 6:19-21; मत्ती 6:19-21)। सभी विश्वासियों को यह समझना चाहिए कि उन्हें अच्छे कामों के गहने और कपड़े पहनने हैं।

2:11-12 "चुपचाप"- 1 कुरि. 14:34,35.

"आधीनता"- 1 कुरि. 11:3,7-10.

2:12 "उपदेश करें"- सार्वजनिक शिक्षा में जब पुरुष उपस्थित होते थे। यह स्त्रियों का कार्य नहीं है। किन्तु उन्हें कम उम्र की स्त्रियों को सिखाना चाहिए (तीतुस 2:3-5)। नए नियम में हमारे पास एक महिला का उदाहरण है जो अकेले में एक पुरुष को वचन सिखाती थी (प्रे.काम 18:26), किन्तु प्रेरितों के काम का लेखक उस पर कोई टिप्पणी नहीं करता है।

2:13-14 दो ऐसे कारण हैं जिन्हें पौलुस बतलाता है कि सार्वजनिक रीति से स्त्रियों को क्यों नहीं सिखाना चाहिए, न ही पुरुषों पर अधिकार रखना चाहिए। दोनों ही कारणों का सम्बन्ध उस समय के रीति-रिवाज़ या पुरुष रोमी साम्राज्य में क्या उचित सोचते थे, उस से था। पहला कारण यह है कि परमेश्वर ने पुरुष को पहले बनाया - उत्पत्ति 2:17-18,21,22. पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने इस तरह दिखा दिया, कि स्त्री के ऊपर वह अधिकार रखे, यह परमेश्वर की योजना है।

दूसरी बात यह कि स्त्री बहकायी गयी थी, पुरुष नहीं, (उत्पत्ति 3:1-6)। ऐसा लगता है कि पौलुस यह सलाह दे रहा है कि बाईबल से सम्बन्धित बातों में पुरुषों से अधिक स्त्रियों के बहकने की संभावना है। यह इस बात को सिद्ध करता है, कि उन्हें यह अनुमति क्यों नहीं मिलनी चाहिए, कि वे पुरुषों पर अधिकार रखें या कलीसिया में उन्हें शिक्षक का स्थान प्राप्त हो।

2:14 "अपराधिनी"- पौलुस यह नहीं कह रहा कि आदम अपराधी नहीं ठहरा (रोमि. 5:12-14), किन्तु यह कि हव्वा ने पहले अपराध किया।

2:15 प्रसव की पीड़ा हव्वा की अनाज्ञाकारिता का परिणाम है - उत्पत्ति 3:16. यहाँ उन स्त्रियों के लिये उत्साहवर्धक शब्द है, जिन्होंने मसीह पर भरोसा किया और अपने जीवन के द्वारा अपने विश्वास का प्रमाण देती हैं। यूनानी भाषा में यहाँ 'सोड्ज़ा' शब्द का इस्तेमाल हुआ है, जिसके अनेक अर्थ हैं जैसे उद्धार, कल्याण, सुरक्षा आदि। बच्चे उपन्न करने से उद्धार पाने की बात मूर्खता है।

स्थिर रहें, तो बच्चों को जन्म देने के समय में सुरक्षा पाएँगी।

3 यह बात सच है कि जो देख-रेख करने वाला (पासबान) बनना चाहता है, वह भले काम की इच्छा करता है। 2इसलिए चाहिए कि देख-रेख (चरवाही) करने वाला, आरोप मुक्त, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, मेहमान नवाज़ी करने वाला, और सिखाने में निपुण हो। 3शराबी या मारपीट करने वाला न हो, पैसों का लोभी न हो, बल्कि कोमल स्वभाव का

3:1-7 यूनानी शब्द "ओवरसियर" (एपिस्कोपोस, जिसका अनुवाद के.जे.वी. संस्करण में 'बिशप' किया गया है), नये नियम में केवल पांच बार उपयोग किया गया है - प्रे.काम 20:28; फ़िलि. 1:1; 1 तीमु. 3:2; तीतुस 1:7; 1 पतर. 2:25. यह दो यूनानी शब्दों का मिश्रण है जिसका अर्थ है "जो देखभाल करता है"। इस शब्द का उपयोग स्थानीय कलीसिया के अगुवों के लिये किया गया है (प्रे.काम 20:17; की 20:28; फ़िलि. 1:1 से तुलना करें). देखरेख करने का कार्य, या बिशप का काम इस पृथ्वी पर सब से सम्माननीय कार्य है और जो इस प्रकार से करते हैं उनके लिये प्रतिफल है - 1 पतर. 4:1-4. इसलिए कि यह पद इतना महत्वपूर्ण है, इसके लिए आवश्यक योग्यताएँ भी ऊँची हैं। यदि कलीसियाएँ इन योग्यताओं को अनदेखा करती हैं और दूसरी योग्यताओं के आधार पर अगुवों का चुनाव करती हैं, वे कलीसियाई जीवन में बड़ी गलती पर हैं और स्वयं को परेशानियों में डाल देंगी।

3:2 "आरोप मुक्त"- जिस व्यक्ति को कलीसिया इस पद के योग्य समझती है, उसे पवित्र ईमानदार और नैतिक जीवन जीना चाहिए कि उसके ऊपर किसी गलत कार्य के लिए उँगली उठायी न जा सके।

"एक ही पत्नी का पति"- उन दिनों में एक से अधिक पत्नी रखना आम बात थी। यह संभव था कि ऐसे पुरुष जिनकी एक से अधिक पत्नियाँ थीं, मसीह के शिष्य बन गए थे। ऐसे व्यक्ति को अगुवे का स्थान नहीं मिलना चाहिए। अगुवों को पूरी कलीसिया (चर्च) के लिये ऐसा नमूना होना चाहिए, जिन्हें लोग अपना आदर्श बना सकें (1 पतर. 5:3)। आरम्भ से मनुष्य के लिये यह परमेश्वर की योजना थी, कि एक पुरुष की एक ही पत्नी हो - उत्पत्ति 3:22-24; मत्ती 19:3-9. कुछ लोग सोचते हैं कि 'एक ही पत्नी का पति' का मतलब है कि ऐसा अगुवा जिसका दूसरी बार विवाह न हुआ हो। दूसरे लोग सोचते हैं कि पौलुस यह सिखा रहा था कि अविवाहित पुरुषों को अगुवे (देख-रेख करने वाले) नहीं होना चाहिए, जब कि वह स्वयं अविवाहित था (1 कुरि. 12:28; 2 कुरि. 11:28)।, फिर भी एक देख-रेख करने वाले से उसका पद ऊँचा था जिसके अन्तर्गत वह अनेकों मण्डलियों के ऊपर था। क्या हम इस संभावना के विषय में सोचते हैं कि वह व्यक्ति जिसने 1 कुरि. 7:1,8,26,27,32-34 लिखा, यह सिखा रहा है कि अविवाहित पुरुषों को देख-रेख करने वाला नहीं बनना चाहिए? पद 4 पर नोट्स देखें।

"संयमी"- अपनी इच्छाओं को आधीन करना।

"सुशील"- 1 कुरि. 9:17; 2 तीमु. 1:7.

"सभ्य"- यह पर्याप्त नहीं कि मात्र परमेश्वर के वचन को जाने या सिखाएं, हमें उसके अनुसार करना चाहिये।

"मेहमान नवाज़ी करने वाला"- उसे लोगों को अपने घर में स्वागत करना चाहिये और दया दिखानी चाहिये - इब्रा. 13:2. तीतुस में यह और अधिक कठोर शब्दों में है - "सेवा के चाहने वाले" - जो पहुनाई या सेवा करने में दिलचस्पी लेता है, न कि उसे प्राप्त करने में। स्वार्थवश से अपने आपको दूसरे उन लोगों से बचाना नहीं चाहिये जिन्हें उसकी ज़रूरत है।

"सिखाने में निपुण"- बाईबल सिखाने के लिए अगुवों को बाईबल का ज्ञान होना चाहिये - यदि वे स्वयं बाईबल नहीं जानते तो दूसरों को क्या सिखाएँगे। उनके पास परमेश्वर द्वारा दी गई सिखाने की योग्यता भी होनी चाहिये।

3:3 "शराबी"- पियक्कड़ न हो, शराब का आदी न हो। रोमि. 14:21 और इफ़ि. 5:12 हमें सर्वोत्तम सिद्धान्त देते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पित करना चाहिये, न कि दास के।

"लोभी न हो"- 6:6-10; मत्ती 6:24; लूका 16:13-14. यदि इन सभी सिद्धान्तों को लागू किया जाए, तो आज कलीसिया से कितने अगुवे निकाल दिये जाएंगे?

हो। वह झगड़ालू और लालची भी न हो। 4वह अपने घर का अच्छा इन्तज़ाम करता हो, और उसके बच्चे पूरी आधीनता के साथ उसका आदर करते हों। 5जब कोई अपने ही घर का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया (चर्च) की देखभाल कैसे करेगा? 6दूसरी बात यह, कि देख रेख करने वाला नया शिष्य न हो, ऐसा न हो, कि घमण्ड से भरकर शैतान के समान सज़ा पाए। 7बाहर वालों के बीच उसकी गवाही अच्छी हो, ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फँदे में फँस जाए।

"कोमल हो, झगड़ालू नहीं"- 2 तीमु. 2:24-25; मत्ती 11:29.

"झगड़ालू"- किसी भी प्रकार से परमेश्वर के सेवकों को गाली नहीं देनी चाहिये। न ही दूसरों को पैसा देकर ऐसा करना चाहिये। जो ऐसा करता है, उसे मसीही नहीं कहलाना चाहिये, न ही उसे मण्डली में अगुवाई करने का स्थान दिया जाए।

"और न लालची हो"- जो व्यक्ति धन या सम्पत्ति बेईमानी या गलत तरीके से लेता है, उसे नेतृत्व का कार्य नहीं दिया जाना चाहिये। इतना ही नहीं, ऐसी कोई भी इच्छा उसे सदा के लिये नाश कर सकती है - 6:5; यूहन्ना 12:6. प्रत्येक मसीही लालच से जो विष समान है, किनारा करे।

3:4 अपने घर का अच्छा इन्तज़ाम करता हो, और बच्चों को सारी गंभीरता से आधीन रखता हो - तीतुस 1:6 देखें। यदि कोई इन्सान अपने घर में सही स्थान नहीं ग्रहण करता है, तो वह कलीसिया की सही रीति से अगुवाई करने के लायक भी नहीं है। यह इस बात को निर्धारित करने के लिये अच्छा पैमाना है, कि कोई व्यक्ति देखरेख करने के योग्य है या नहीं। क्या इसका अर्थ यह है, कि विवाहित होने के बाद यदि उसकी संतान नहीं है, तो वह देखरेख करने वाला नहीं बन सकता? नहीं ऐसा नहीं है। पौलुस का अर्थ यह है, कि उसे अपने बच्चों को वश में करना चाहिये। पद 2 से तुलना करें।

"एक ही पत्नी का पति" - यदि पौलुस यह नहीं कह रहा है कि देखरेख करने वाले के पास बच्चे होने ही चाहिये, तो वह यह भी नहीं कह रहा है, कि उसे विवाहित होना ही चाहिये। दोनों बातें एक ही दायरे की हैं।

3:6 "नया शिष्य न हो"- पौलुस तुरन्त कहता है .... क्यों? यह बेहतर है कि देखरेख करने वाला नया विश्वासी न हो, बजाए इसके कि ऐसे लोगों को नियुक्त किया जाए, जिन्हें अनुभव न हो। इसके पहले कि विश्वासियों को नेतृत्व का काम सौंपा जाए, उन्हें आत्मिक रूप से तरक्की करना, परमेश्वर के सत्य में मज़बूत हो जाना चाहिये। नहीं तो वे दूसरों को सिखा नहीं पाएँगे, न ही अगुवाई कर पाएंगे। यह भी कि आत्मिक शिशु, जिन्हें नेतृत्व की जिम्मेदारी दी जाती है, घमण्ड से फूल न जाएँ।

"शैतान के समान सज़ा"- अर्थ यह हो सकता है, शैतान निरन्तर विश्वासियों पर दोष लगाता है (प्रका. 12:10)। यदि वह चर्च के अगुवे में घमण्ड और कपट देखता है, तो उसे परमेश्वर के साम्हने दोष लगाने का अवसर मिलता है। मत्ती 4:1 में शैतान पर नोट्स देखें।

3:7 "बाहर...हो"- कुल. 4:5; 1 थिस्स. 4:12; 1 कुरि. 10:32; 1 पतर. 2:12; मत्ती 5:16. सच पूछें तो यह बहुत ज़रूरी है। इसका अर्थ है कि उसका जीवन, मात्र शब्द नहीं, उन लोगों के लिए गवाही होना चाहिए। यदि एक मण्डली ऐसे व्यक्ति को अगुवा नियुक्त करती है, जो समाज में दुष्टता और अनैतिकता का जीवन जीता है, तो वे ऐसा कर के उस पर दोष लगाकर पूरी कलीसिया के लिए शर्म का कारण बन सकते हैं। यह उनके लिए एक ठोकर का कारण होगा, जो लोग मसीह पर विश्वास करना और कलीसिया का अंग बनना चाहेंगे।

"शैतान के फँदे"- तुलना करें लूका 22:31,33; भजन 91:3; 124:7; 2 तीमु. 2:26. तीतुस 1:6-9 में एक बार फिर पौलुस अगुवे में आवश्यक गुणों की सूची देता है। जो तीमुथियुस के पहले पत्र के पहले अध्याय में दिखाई देती है। यह भी कि अगुवों के बच्चों को विश्वासयोग्य होना चाहिए, न कि अनाज्ञाकारी। उसे बहुत जल्द गुस्सा नहीं आना चाहिए, नीच कमाई का प्रेमी नहीं होना चाहिए। वह पवित्र और सच्चा हो और विश्वसनीय वचन को पकड़ कर रखता हो।

8वैसे ही सेवकों को भी सम्मानीय होना
चाहिए। वे दोरंगी, शराबी और पैसों के
लालची न हों, 9लेकिन विश्वास के भेद
को शुद्ध विवेक से संभालें। 10इन्हें भी
पहले परखा जाए, उसके बाद यदि निर्दोष
निकलें, तो सेवक का काम करें।
11इसी प्रकार से उनकी पत्नियों को
भी आदरणीय होना चाहिए, निन्दा करने
वाली नहीं, परन्तु संयमी और सब बातों
में विश्वासयोग्य हों।
12सेवक एक ही पत्नी के पति हों और
अपने बच्चों पर उचित निगरानी रखते हों
और अपने घरों की ज़िम्मेदारी निभाना जानते
हों। 13क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी
तरह से कर चुके हैं, वे लोगों से इज़्ज़त
पाते हैं और मसीह यीशु में उनके भरोसे
के कारण उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।
14मैं तुम्हारे पास जल्दी आने की आशा
रखने पर भी ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता
हूँ, 15कि अगर मेरे आने में देर हो, तो
तुम जान लो कि परमेश्वर के घर में, जो
जीवित परमेश्वर की कलीसिया (चर्च) है
और सत्य का खंभा और नींव है, उसमें
कैसा व्यवहार करना चाहिए। 16इस में

3:8 "सेवक"- डीकन्स - यह यूनानी शब्द से निकला है जिसका अर्थ है 'सेवा करना।' आरम्भिक कलीसिया में अगुवे देखरेख करने वाले या बिशप और सेवक हुआ करते थे। फ़िलि. 1:1. अगुवों का कार्य था कलीसिया के आत्मिक जीवन को देखना और वचन की शिक्षा देना (पद 2)। सेवक दूसरे कार्य भी करते थे। प्रे.काम 6:1-6 से तुलना करें।

"सम्माननीय"- यदि लोग आदर के योग्य नहीं हैं, तो चर्च में आदर पाने के भी योग्य नहीं हैं।

"शराबी...न हों"- इस सम्बन्ध में कलीसिया में छोटे से छोटे सेवक को भी उतना ही ईमानदार होना चाहिए जितना कि प्रधान रखवाले को - पद 3. कलीसिया में या किसी भी संस्था में, दुष्ट लोग एक समस्या उत्पन्न कर सकते हैं और सदस्यों का आत्मिक और भौतिक नुकसान कर सकते हैं। दुख की बात यह है कि अगुवेपन की इन योग्यताओं के बारे में सतर्कता नहीं बरती जाती है।

3:9 "विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से संभालें"- 1:5,19. विश्वास के रहस्य का अर्थ है परमेश्वर का यह ज्ञान कि क्या विश्वास करना चाहिए। सेवक एवं अन्य कलीसिया के अगुवे (और प्रत्येक सदस्य) को ईमानदारी से इस सत्य पर भरोसा करना चाहिए और मात्र शब्दों तक सीमित न रहें।

3:10 "इन्हें भी पहले परखा जाए"- इस से पहले कि किसी व्यक्ति को चर्च में जिम्मेदारी दी जाए, नियुक्त करने वालों को यह आश्वासन होना चाहिए कि वह इस पद के योग्य है। यदि वह अयोग्य व्यक्ति को पद दें या इस आशा से दिए गए उद्देश्य के अलावा किसी और उद्देश्य से पद दें, तो चर्च में समस्या होगी।

3:11 सेवकों की पत्नी या ऐसी महिला जिसके पास चर्च में ज़िम्मेदारी है, उसे समाज में सम्मानीय होना चाहिए। (रोमि. 16:1)।

3:12 - 2:4.

3:13 मज़बूत और निश्चित विश्वास उनको मिलेगा जो मसीह की सेवा ईमानदारी से करते हैं और अपने कार्य के प्रति समर्पित हैं। इब्रा. 6:10-11 से तुलना करें।

3:15 "परमेश्वर के घर"- का अर्थ शायद चर्च है - इफ़ि. 2:19; इब्रा. 3:6 जिस चर्च की स्थापना परमेश्वर ने की है और वह उसका पोषण करते हैं इफ़ि. 3:14-15; 5:32; मत्ती 12:46-50; इब्रा. 2:11. जैसा कि प्रत्येक परिवार में होता है, परमेश्वर के परिवार में भी होता है, व्यक्ति को व्यवहार करना जानना चाहिए।

"सत्य...नींव"- यहाँ पौलुस किसी स्थानीय चर्च या किसी और के बारे में नहीं कह रहा है। मसीह इस चर्च का सिर और नींव हैं (इफ़ि. 1:22-23; 2:20,22; 1 कुरि. 3:11; कुल. 1:18)। इसे मसीह अपने लिए बना रहे हैं (मत्ती 16:18), और वे इस मण्डली के अंग हैं (यूहन्ना 1:12-13; 3:3-8; 1 कुरि. 12:12-13)। यही मात्र एक कलीसिया (चर्च) है, जो परमेश्वर के सत्य की ठोस नींव पर बनी है। परमेश्वर के हाथों में यह मण्डली 'खम्भा और नींव' बनती है, जो संसार के सामने परमेश्वर के वचन (सत्य) को रखती है। यह सत्य की नींव बनती है, क्योंकि मसीह इसके सिर हैं और इसकी नींव भी।

कोई शक नहीं कि खरे जीवन (भक्ति) का भेद गम्भीर है अर्थात् परमेश्वर जो देह में आए, उनके वायदे पवित्र आत्मा के दवारा सच ठहरे, स्वर्गदूतों को दिखाई दिए, गैर-यहूदियों में उनका सन्देश सुनाया गया, दुनिया में उन पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाए गए।

4 लेकिन आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आने वाले समयों में बहुत लोग भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएँगे। 2वे पाखण्ड के साथ झूठ बोलेंगे, उनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया हो। 3वे शादी (विवाह) करने से रोकेंगे और खाने की

3:16 "खरे जीवन (भक्ति) का भेद"- पौलुस उन लोगों के व्यवहार के बारे में बात कर रहा है जो परमेश्वर और उसकी कलीसिया के हैं। जैसे परमेश्वर ने दूसरे सत्य को प्रगट किया है, यह एक रहस्य है (रोमि. 16:25-26; इफ़ि. 3:2-6; 5:32; कुल. 1:26-27)। बाईबल रहस्य एक ऐसा सत्य है, जिसे मनुष्य तब तक नहीं जान सकता जब तक कि परमेश्वर उसे प्रगट न करे। यूनानी शब्द भक्ति का अर्थ है सादगी, श्रद्धा। इसका अर्थ है परमेश्वर द्वारा दी गई शिक्षा के अनुसार, परमेश्वर के प्रति आदर भाव के साथ जीना - तुलना करें 2:2; 4:7-8; 6:3,5,6,11; 2 तीमु. 3:5; तीतुस 1:1.

"देह में"- यूहन्ना 1:14; रोमि. 8:3; इब्रा. 2:14; 10:5.

"आए(वह जो देह में प्रगट हुए)"- परमेश्वर, मसीह में शरीर में होकर आए - यूहन्ना 1:14.

"आत्मा"- मत्ती 3:16; 12:28; यूहन्ना 1:32-34; रोमि. 1:4. मसीह के जीवन में और उनके मरे हुओं से जी उठने में, परमेश्वर के आत्मा ने यह प्रगट किया, कि मसीह पवित्र निष्कलंक और परमेश्वर के पवित्र बेटे हैं।

"स्वर्गदूत"- उत्पत्ति 16:7. मसीह के जन्म के समय में स्वर्गदूत उपस्थित थे, जंगल में उनकी परीक्षा के समय और उनके जी उठने एवं स्वर्ग पर उठाए जाने के समय भी (लूका 2:9-15; मरकुस 1:13; मत्ती 28:5; प्रे.काम 1:10-11 इब्रा. 1:6)।

"गैर-यहूदियों में"- मत्ती 28:18-19; इफ़ि. 3:8-9; कुल. 1:23.

"विश्वास किया गया"- प्रे.काम 4:4; 5:14; 9:42; 11:21; 14:1; 17:12; 18:8; 19:18; 21:20.

"महिमा"- लूका 24:51; प्रे.काम 1:9; इफ़ि. 1:20-21.

4:1 "आत्मा"- परमेश्वर के आत्मा ने भविष्य को प्रगट किया। यशा. 46:10. परमेश्वर जानते थे कि झूठे उपदेशक और शिक्षक उठ खड़े होंगे, इसलिए बाईबल में बहुत स्थान पर उन्हों ने चेतावनी दी थी। मत्ती 7:15; 24:4-5,24; प्रे.काम 20:29-30; रोमि. 16:16-17; 2 कुरि. 11:13-15; 2 तीमु. 3:1; 4:3; 2 पतर. 2:1 आदि।

"भरमाने वाली आत्माएँ"- मत्ती 4:24. हमें यह समझना है कि आत्माओं के अनदेखे संसार में कुछ आत्माएँ मसीहियों को झूठे सिद्धान्त सिखाकर परमेश्वर के सत्य से गुमराह करती हैं। इफ़ि. 6:11-12 से तुलना करें।

"विश्वास"- यह अर्थ उस सच्चाई से है, जिसे परमेश्वर ने प्रगट किया, वह सत्य जिसे सच्चे विश्वासियों ने ग्रहण किया।

4:2 पौलुस उन लोगों से परिचय कराता है, जिन्हें कलीसिया में झूठी शिक्षा फैलाने के लिए दुष्टात्माएँ उपयोग करती हैं।

"झूठ बोलेंगे- यह आवश्यक नहीं कि जिन बातों को वे सिखाते हैं, उन पर स्वयं भरोसा करते हों। उन्हें झूठ बोलने में कोई कठिनाई नहीं होती है। इस तरह वे दिखा देते हैं कि किसकी संतान हैं - यूहन्ना 8:44. 'दागा हुआ विवेक' ऐसा है जो मरा हुआ है, शान्त है। इफ़ि. 4:19 से तुलना करें।

4:3 हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि ये दो बातें हैं जो झूठे शिक्षक करने के लिए मना करते हैं। इसके अलावा और भी हैं। किन्तु ये दो, यह सिखाने के लिए काफ़ी हैं कि उनकी शिक्षा परमेश्वर के वचन पर नहीं है। सच पूछें तो वे अपनी शिक्षाओं को बाईबल से ऊँची दिखाते हैं। सभी गलत शिक्षाओं के बारे में यह सब से खतरनाक शिक्षा है।

"शादी (विवाह) करने से रोकेंगे"- देखें उत्पत्ति 1:27-28; 2:22-24; मत्ती 19:4-6; इब्रा. 13:4. रोकना एक कठोर शब्द है। 1 कुरि. अध्याय 7 में (1 कुरि. 7:2,25,26 आदि) जो भाषा उसने इस्तेमाल की है, उस से तुलना करें। कलीसिया में समस्या के बावजूद पौलुस ने विवाह करने से

कुछ वस्तुओं से परहेज़ करने की आज्ञा देंगे, जिन्हें परमेश्वर ने इसलिए बनाया कि विश्वासी, और सत्य के पहचानने वाले, धन्यवाद के साथ खाएँ। 4इसका कारण यह है कि परमेश्वर द्वारा बनायी गयी हर वस्तु अच्छी है और कुछ भी अस्वीकार करने के लायक नहीं, यदि उसे शुक्रगुज़ारी (धन्यवाद) के साथ खाया जाए, 5क्योंकि वह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाती है।

6अगर तुम भाइयों को इस बारे में समझाते रहोगे, तो मसीह यीशु के अच्छे सेवक ठहरोगे और विश्वास और उस अच्छे उपदेश की बातों से, जो तुम मानते आए हो, तुम्हारा पालन-पोषण और विकास होता रहेगा। 7लेकिन अशुद्ध (परमेश्वर रहित) और बूढ़ियों की सी कहानियों से बचे रहो, और पवित्र जीवन की ओर यत्न

मना नहीं किया, किन्तु सलाह दी। इब्रा. 13:4 भी देखें। इस पृथ्वी पर किसी को ईश्वरीय अधिकार नहीं है, कि किसी को विवाह करने से रोके। बाईबल में कहीं ऐसी सलाह नहीं है। यहां पौलुस कहता है कि यह शिक्षा परमेश्वर से नहीं, किन्तु दुष्टात्माओं और झूठे भविष्द्वक्ताओं की ओर से आती है।

"खाने"- उत्पत्ति 1:29; 9:3; मरकुस 7:19; प्रे.काम 10:9,16; रोमि. 14:14,20. 'आज्ञा दे' शब्द पर ध्यान दें। भोजन के सम्बन्ध में लोगों को आज्ञा देना कि वे क्या खाएँ या क्या न खाएँ, बाईबल की शिक्षा के अनुसार नहीं है। रोमि. 14 में पौलुस ने जो सिखाया उस से तुलना करें। बाईबल में न्यू टेस्टामेन्ट के आधार पर कोई ऐसा भोजन नहीं जिसे खाना मना किया गया है। इस पृथ्वी के सभी भागों में कुछ लोग कुछ प्रकार के भोजन को न खाने, शादी (विवाह) आदि को न करने को आत्मिकता और पवित्रता का प्रतीक समझते हैं। शायद यही कारण है कि दुष्टात्माएँ सोचती हैं कि ऐसी शिक्षाएँ दी जाएँ। वे सदा पवित्रता और धार्मिकता के सम्बन्ध में झूठी और बर्बादी करने वाली शिक्षा को फैलाना चाहती हैं। साथ ही वे यह चाहती हैं कि लोग परमेश्वर के जीवित वचन पर से ध्यान हटाकर भोजन और सन्यासवाद, शरीर को पीड़ा देने वाली और अपने आप को इन्कार करने वाली बातों को प्रोत्साहन दें। कुल. 2:20,23 से तुलना करें। यह शिक्षा कि वस्तुएँ हमें परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य बनाती हैं, दुष्ट आत्मा की ओर से हैं। हमारा ग्रहण किया जाना, यीशु पर विश्वास करने के द्वारा और हमारे जीवन का उसमें होने के द्वारा है। इसके अलावा और कोई आज्ञा नहीं है। इसे छोड़ और कोई धार्मिकता की आवश्यकता नहीं है।

"धन्यवाद"- मत्ती 14:19; 26:26; रोमि. 14:6; कुल. 2:6-7; 1 थिस्स. 5:18.

4:4 उत्पत्ति 1:1,31 । पौलुस रोमियों को याद दिला रहा है कि सभी चीज़ों को रचने वाले परमेश्वर हैं। बनाई हुई वस्तुओं में कुछ भी बुरा नहीं है। विवाह आदि जो परमेश्वर ने नियुक्त किया है, उसे न करना पवित्रता और आत्मिकता नहीं है।

4:5 परमेश्वर के वचन में मनुष्य के इस्तेमाल के लिए हर तरह के भोजन को ठहराया है। धन्यवाद की प्रार्थना उस व्यक्ति के लिए भोजन को शुद्ध और पवित्र करती है, जो यह प्रार्थना करता है।

4:6 "यीशु के अच्छा सेवक"- अपने मन, हृदय और आत्मा से इस प्रकार का बनने के लिए कलीसिया में प्रत्येक प्रकार के शिक्षक, प्रचारक, अगुवे को प्रयास करना चाहिए। यदि वे ऐसा चाहते हैं तो इस सत्य को उन्हें पकड़े रहना है और विश्वास एवं साहस के साथ दूसरों को बताना है।

4:7 "अशुद्ध (परमेश्वर रहित)"- 1:4.

"बूढ़ियों की सी कहानियों"- पौलुस का अर्थ उन कहानियों से था जो सत्य नहीं थीं। जिनका कोई इतिहास नहीं था, और न ही वास्तविकता।

"खरा जीवन"- पौलुस एक ऐसे यूनानी शब्द का उपयोग करता है जो मसीही विश्वास को व्यवहारिक जीवन में प्रगट करने को दिखाता है, यह विश्वास का जीवन है जिसे प्रत्येक मसीही विश्वासी को जीना चाहिए। इसका मतलब हुआ कि उन्हें ऐसा करने के लिए स्वयं को सिखाना है, अनुशासित करना है। इब्रा. 5:14; 1 कुरि. 9:24-27 से तुलना करें। मसीह के सेवक को चाहिए कि मानसिक एवं शारीरिक रीति से उसी प्रकार अपने आपको प्रशिक्षित करे, जैसे एक पहलवान शारीरिक बातों में अपने आप को करता है।

से बढ़ते जाओ। 8क्योंकि शारीरिक व्यायाम
का लाभ सीमित है, पर पवित्र जीवन सब
बातों के लिए फ़ायदेमन्द है, क्योंकि इस
समय के और आने वाले जीवन का वायदा
भी इसी में है।

9और यह बात सच और हर तरह से मानने
के योग्य है। 10हम इसीलिये मेहनत करते
हैं और निन्दा सहते हैं, क्योंकि हम जीवित
परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, जो सब लोगों
के खासकर विश्वासियों के मुक्तिदाता हैं।

11इन बातों की आज्ञा दो और उन्हें
सिखाते रहो। 12कोई तुम्हारी जवानी को
तुच्छ न समझने पाए, लेकिन बातचीत,
चाल-चलन, प्रेम, आत्मा में, विश्वास और
पवित्रता में विश्वासियों के लिए नमूना बन
जाओ। 13मेरे आने तक पढ़ने, और उपदेश
और सिखाने में लगे रहो। 14उस वरदान
(ईनाम) के विषय में जो तुम में है, और

4:8 "इस...है"- भक्ति इस वर्तमान और भविष्य में आशीष लाती है। क्षमा न पाए हुए व्यक्ति को अधिकार नहीं कि वह इस संसार में और आने वाले संसार में परमेश्वर से कुछ आशा रखे।

4:10 "मेहनत"- 1 कुरि. 15:10; कुल. 1:29.

"जीवित परमेश्वर"- 3:15. मसीह में विश्वासी के पास 'जीवित परमेश्वर' एक 'जीवित आशा' है (1 पतर. 1:3)।

"मुक्तिदाता(उद्धारकर्ता)"- पौलुस यह नहीं कह रहा है कि सभी लोग क्षमा पाएंगे। वह यह कह रहा है कि वही हैं जो दूसरों की तब तक रक्षा करते हैं, प्रबंध करते हैं, जब तक वे इस पृथ्वी पर हैं (प्रे.काम 14:17; 17:25-27)। इतना ही नहीं, वह सभी को अनन्त मुक्ति देते हैं और क्षमा करने के लिए तैयार हैं, इसीलिए हर प्रकार से उद्धारकर्ता हैं (1:1)।

4:11 "इन बातों"- 4:3 जैसी बातें नहीं, लेकिन ऐसी जिन्हें परमेश्वर ने प्रगट किया। किसी भी कलीसियाई अगुवे का यह अधिकार नहीं कि वह ऐसा कुछ सिखाए, जो वचन में नहीं है।

"आज्ञा...रहो"- मसीह के सच्चे सेवक अधिकार के साथ बोल सकते हैं। उन्हें ऐसा करना भी चाहिये। वे पृथ्वी पर मसीह के समान हैं। आत्मिक बातों में सत्य के सम्बन्ध में उनके पास परमेश्वर का ज्ञान है। वे बूढ़ी स्त्रियों की कहानियाँ और सन्देहस्पद शिक्षाएँ नहीं देते हैं। उन्हें यह नहीं दिखाना चाहिये कि वे संदेह वाली बातें सिखा रहे हैं। देखें 1 पतर. 1:1.

4:12 "जवानी"- इफ़िसुस की मण्डली में दूसरे लोगों की तुलना में तीमु. कम उम्र का रहा होगा। लेकिन परमेश्वर ने उसे उस पद पर रखा ताकि अधिकार के साथ वे सच वचन दे और किसी को भी मौका न दे कि कम उम्र का होने के कारण तुच्छ ठहराया जाए।

"प्रेम...पवित्रता"- पौलुस मसीही जीवन के लिये बातों की सूची देता है। यह संभव नहीं कि इन में से किसी एक को निकाल दिया जाए और फिर भी उस प्रकार का जीवन रहे। दुख की बात यह है कि कुछ प्रचारक एक या दो में रुचि दिखाते हैं, किंतु दूसरों की अनदेखी करते हैं।

"नमूना बन"- प्रत्येक मसीही अगुवे को आदर्श होना चाहिये (1 पतर. 5:3; 1 कुरि. 11:1; फ़िलि. 3:17; 1 थिस्स. 3:7)। यदि वह एक अच्छा नमूना नहीं है, तो उसे अगुवा नहीं बनना चाहिये।

4:13 "पढ़ने"- यहाँ इस शब्द का अर्थ है - वचन का चर्च या आराधनालय में पढ़ा जाना। जब यहूदी सामूहिक आराधना के लिये आया करते थे, तब ऐसा वे किया करते थे। लूका 4:16-17; एज्रा 8:1-3; प्रे.काम 13:15 देखें। मण्डली बनने के बाद यह अभ्यास उन्हों ने जारी रखा (कुल. 4:16-17; 1 थिस्स. 5:27)। यह अभ्यास उन दिनों इसलिए अच्छा था, क्योंकि हर एक मसीही के पास बाईबल नहीं थी। यदि होती भी, तौभी प्रत्येक पढ़ नहीं सकता था। आज भी संसार के अनेक स्थानों में बाईबल का सार्वजनिक रूप से पढ़ा जाना फ़ायदेमन्द सिद्ध हो सकता है।

"सिखाने"- एक पास्टर का काम सन्देश देना एवं सिखाना है। सन्देश देने का मकसद है इच्छा और विवेक तक पहुँचने के साथ ही सुनने वाले के मन तक पहुँचना। मसीही विश्वास की सच्चाइयों को सिखाना शिक्षा है। प्रायः विश्वासियों के मन (दिमाग) तक पहुँचना इसका लक्ष्य होता है (हालांकि इच्छा को अनदेखा नहीं किया जा सकता)। मसीही पास्टर के जीवन में इन दोनों का महत्व है।

4:14 "वरदान"- 2 तीमु. 1:6. पौलुस आत्मिक योग्यता की बात करता है। देखें रोमि. 12:6-8; 1 कुरि. 1:7; 12:4-11,28; 14:1.

भविष्यद्वाणी के द्वारा अगुवों के हाथ रखते समय तुम ने पाया था, लापरवाह मत रहो।
15उन बातों को सोचते रहो और उन्हीं में अपना पूरा ध्यान लगाए रहो, ताकि तुम्हारी तरक्की सब पर प्रगट हो। अपने और अपने उपदेश के विषय में सावधान रहो। 16इन बातों में स्थिर बने रहो, क्योंकि अगर ऐसा करते रहोगे तो तुम अपने, और अपने सुनने वालों के लिए भी मुक्ति का कारण बनोगे।

5 किसी बूढ़े को न डाँटो, लेकिन उन्हें पिता जानकर, जवानों को भाई जानकर
2और बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर समझा दो। जवान महिलाओं को पूरी पवित्रता से बहन जानकर समझा दो।
3उन विधवाओं को इज़्ज़त दो जो सचमुच में विधवा हैं 4यदि किसी विधवा के बच्चे

"भविष्यद्वाणी के द्वारा"- 1:18. पवित्र आत्मा की प्रेरणा से भविष्यद्वाणी का किया जाना पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया ईमान है (1 कुरि. 14:29-31)।

"अगुवों के हाथ रखते समय"- यह उस समय हुआ जब इफ़िसुस में अगुवे इकट्ठे हुए और सेवकाई के लिये उसे अलग किया (प्रे. काम 13:3 से तुलना करें)। बिना हाथ रखे परमेश्वर लोगों को वरदान और योग्यताएँ दे सकते हैं और देते हैं। किंतु कलीसिया (चर्च) में हाथ रखने की विधि लोगों की विशेष सेवा की निपुणता के लिये परमेश्वर और विश्वासियों के बीच एकता और शान्ति को दिखाती है।

"लापरवाह"- परमेश्वर द्वारा दिए गए किसी वरदान को हल्की-फुल्की बात समझना सम्भव है। तुलना करें मत्ती 25:24-27.

4:15 "पूरा"- जो सेवा पूरे मन से नहीं की जाती, परमेश्वर को खुश नहीं कर सकती। मसीह के प्रत्येक सेवक के पास वही तेज इच्छा होनी चाहिये, जो पौलुस के पास थी। प्रे.काम 20:24; कुल. 1:29.

4:16 मसीह के प्रत्येक सेवक को ध्यान रखना चाहिये कि वह कैसा जीवन जीता है, क्या सिखाता है। यदि हमारी शिक्षा ठीक नहीं है तो पवित्र जीवन जीने का कोई अर्थ नहीं है। यदि हमारा जीवन पवित्र नहीं है तो सही सिद्धान्त सिखाने का कोई अर्थ नहीं।

"अपने...कारण"- यहेज. 33:6,9. केवल परमेश्वर बचाने वाले हैं (1:1)। पौलुस मानता था कि तीमु. मुक्ति पा चुका है, नया जन्म पा चुका है, उसने अनन्त जीवन ग्रहण किया है (1:2)। सुसंदेश देने और जीवित रहने के तरीके के द्वारा परमेश्वर के सेवक, उद्धार नहीं प्राप्त कर सकते (इफ़ि. 2:8-9)। किंतु परमेश्वर की सहायता से वे सही जीवन जीने की जिम्मेदारी पूरी कर सकते हैं (फ़िलि. 2:12)। यह बहुत ज़रूरी है (कुल. 1:23; इब्रा. 3:6,14; 6:12)। अपनी और अपनी शिक्षा की चौकसी कर के वे अपने आपको गंभीर ताड़ना से बचा सकते हैं। यूनानी शब्द, जिसका अनुवाद 'मुक्ति' किया गया है इसका अर्थ पाप से मुक्ति के साथ-साथ अनेक खतरों और बीमारियों से बचना है।

इसका अर्थ है कि परमेश्वर के हाथों में विश्वासयोग्य सेवक एक हथियार है। परमेश्वर उसे दूसरों के उद्धार के अनुभव में लाने के लिये उपयोग करता या उनके विश्वास में आगे बढ़ने में सहायक होगा। क्या मनुष्य के लिये इस से बढ़कर कोई कार्य है?

5:1-2 मसीह ने जिस पास्टर को कलीसिया के ऊपर देखरेख करने वाला ठहराया है, उसके पास अधिकार है। उसे एक तानाशाह के समान चर्च पर शासन नहीं करना चाहिये। उसे यह जानना चाहिये कि चर्च एक परिवार और घर के समान है - 3:15 और उसी के आधार पर व्यवहार करे।

5:3 पास्टर और मण्डली का यह उत्तरदायित्व हैं, कि मण्डली के निर्धनों की देखरेख की जाए। यह उस समय अधिक है जब ऐसी निर्धन विधवाएँ हैं जिनके पास कोई साधन नहीं है, या कार्य नहीं कर सकतीं।

5:4 बच्चे और नाती-पोते की जो ज़िम्मेदारी बूढ़े लोगों के प्रति है, उस पर ध्यान दें।

जैसा परमेश्वर को पसंद है, उस प्रकार से जीवन बिताकर परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को दिखाएँ। यह प्रत्येक विश्वासी के लिये कितना महत्वपूर्ण है। हमें न केवल सच पर भरोसा करना चाहिये, किंतु निकटवर्ती लोगों के मध्य उसका अभ्यास भी करना चाहिये। परमेश्वर की कही हुई बातों को हमें न केवल जानना चाहिये, जो कुछ उन्हों ने कहा है, वह करना भी चाहिये। परमेश्वर को खुश करने का यही एक तरीका है। यदि बच्चे या नाती-पोते जो विधवा की मदद कर सकते हैं, और नहीं करते, वे परमेश्वर के विरोध में दुष्टता (अपराध) कर रहे हैं।

या नाती-पोते हों, तो वे पहले अपने ही
खानदान के साथ योग्य बर्ताव करना,
और अपने माता-पिता आदि को उचित
आदर (हक) देना सीखें, यह परमेश्वर को
अच्छा लगता है। 5जो सचमुच में विधवा
है और उसका कोई नहीं, वह परमेश्वर
पर आशा रखती है। वह रात-दिन बिनती
और प्रार्थना में लवलीन रहती है। 6परन्तु
जो भोग विलास में पड़ गई, वह जीते जी
मर गई है। 7इन बातों की भी आज्ञा दिया
करो ताकि वे निर्दोष रहें। 8यदि कोई अपनों
की और विशेष करके अपने घराने की
ज़रूरतों पर ध्यान न दे, तो वह विश्वास
से हट गया है, और अविश्वासी से भी
अधिक बुरा है।

9उसी विधवा का नाम लिखा जाए, जो
साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही
पति की पत्नी रही हो, 10और भले काम
में उसका अच्छा नाम रहा हो, जिसने बच्चों
का पालन-पोषण किया हो, मेहमानों की
सेवा की हो, पवित्र लोगों के पाँव धोए
हों, दुखियों की सहायता की हो, और हर
एक भले काम में मन लगाया हो।

11लेकिन जवान विधवाओं के नाम
न लिखना, क्योंकि जब वे मसीह की
खिलाफ़त करके सुख-विलास में पड़
जाती हैं, तो विवाह करना चाहती हैं,
12और जीवन भर विधवा रहने के फ़ैसले
को तोड़ने की दोषी ठहरती हैं 13इसके
साथ ही साथ वे घर-घर फिरकर आलसी
होना सीखती हैं, और केवल आलसी ही
नहीं, किन्तु बकवास और बुराई करती

"हक देना सीखें"- बच्चे सोच सकते हैं कि माता-पिता के प्रति हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है, किंतु इस विषय पर परमेश्वर के विचार भिन्न हैं।

5:5 पौलुस मसीही विधवाओं के विषय कह रहा है। यदि वे ज़रूरत में हैं और उनकी मदद करने वाला कोई नहीं है, तब चर्च के किसी व्यक्ति को उनकी सहायता करनी चाहिये। दूसरों की आवश्यकता पूरी करने का यह एक तरीका है।

5:6 "जीते जी मर गई है"- इसका अर्थ है कि ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के जीवन से अलग है, आत्मिक मृत्यु की दशा में है (इफ़ि. 2:1; 4:12)। यह मात्र उन सभी विधवाओं के बारे में सच नहीं है, जो भोग-विलास में जीती हैं, किंतु सब के बारे में जो ऐसा करता है। चाहे कोई जीवित दिखता है, यदि मसीह में नहीं है, तो मरा हुआ है। जो लोग परमेश्वर के बजाए भोग-विलास के लिये जीवित हैं, यह सोच सकते हैं, कि वे जीवित हैं लेकिन ऐसा नहीं है। देखें यिर्म. 17:9.

5:8 "विश्वास"- यहाँ इस शब्द का इस्तेमाल पौलुस मसीही विश्वास और जीवन के लिये करता है। इसका केन्द्र प्रेम है। यदि कोई प्रेम में नहीं चलता, तो वह मसीह का इंकार कर रहा है (1 यूहन्ना 3:16-18; 4:7-8)। मसीह का इंकार करने वाले बहुत से अविश्वासी भी अपने ज़रूरतमंद रिश्तेदारों की देखभाल करते हैं। क्या मसीह के शिष्य अपनी इस ज़िम्मेदारी से किनारा कर सकते हैं?

5:9-10 "नाम लिखा जाए"- पौलुस यह नहीं कर रहा है कि 60 से कम आयु की विधवाएँ जो जरूरत में हैं, उनकी सुधि नहीं लेनी चाहिये। यह भी नहीं कि ऐसी विधवा जो आवश्यकता रहने के बावजूद यदि इन शर्तों को पूरा नहीं करती है, उसकी सहायता नहीं की जानी चाहिये। इसलिए इस सूची में जिन विधवाओं की बात की गई है, ये वे हैं, जिन्हें किसी सेवा के लिये नियुक्त किया गया है। इन विधवाओं को कुछ शर्तों को भी पूरा करना चाहिये, जैसा अगुवे और सेवकों को कलीसिया की कुछ शर्तें पूरी करनी हैं (3:1-12)।

5:11-12 सूची में जिन विधवाओं के नाम हैं, उन्हें मसीह के प्रति समर्पित और सेवा के लिये चर्च द्वारा अलग किया जाना चाहिये। पुनर्विवाह बुरा नहीं है, किंतु मसीह की सेवा के लिये समर्पित विधवाएँ यदि फिर से विवाह करें, तो वे पूरी तरह से सेवा नहीं कर पाएंगी या फिर सेवकाई छोड़ देंगी। जिस काम को करने की प्रतिज्ञा की गई है, यदि उसे छोड़ दिया जाए तो यह एक छोटा अपराध नहीं है। इस कारणवश ऐसी विधवाओं पर परमेश्वर का दण्ड आ सकता है।

5:13 यही कारण है कि नवजवान विधवाओं को कलीसिया में सेवकाई के लिये नियुक्त नहीं किया जाना चाहिये।

रहती और दूसरों के काम में दखलअंदाज़ी करती हैं और अनुचित बातें बोलती हैं।
14इसलिए मैं यह चाहता हूँ कि जवान विधवाएँ विवाह करें और बच्चों को जन्म दें और घर की ज़िम्मेदारियाँ लें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें। 15क्योंकि बहुत सी बहककर शैतान के पीछे हो चुकी हैं।

16यदि किसी विश्वासी या विश्वासिनी के यहाँ विधवा हो, तो वही उनकी मदद करे, कि चर्च पर भार न हो, ताकि चर्च उनकी सहायता कर सके, जो सचमुच विधवाएँ हैं।

17जो अगुवे अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में मेहनत करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएँ। 18क्योंकि बाइबल में लिखा है कि दाँवने वाले बैल का मुँह न बान्धना, क्योंकि मज़दूर अपनी मजदूरी का हक़्क़दार है।

19यदि किसी प्राचीन पर दोष लगाया जाता है, तो बिना दो या तीन गवाहों के न सुनो। 20अपराध करने वालों को सब के सामने डाँटो, ताकि और लोग भी डरें।

21परमेश्वर, और मसीह यीशु, और चुने हुए स्वर्गदूतों को उपस्थित जानकर मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि तुम मन खोलकर इन बातों को माना करो, और कोई काम

5:14 पौलुस कह रहा है कि जवान विधवाओं के लिये बेहतर है कि वे फिर से विवाह करें, बजाए इसके कि कलीसिया की सेवा के लिये समर्पण करें, प्रतिज्ञा तोड़ें और फिर सेवा छोड़कर विवाह करें।

"विरोधी"- जो मसीह या कलीसिया के विरोध में है। इस प्रकार के लोग मसीहियों की आलोचना करने और उन में कमी ढूँढने का प्रयत्न करते हैं। मसीहियों को ऐसा अवसर नहीं देना चाहिये।

5:15 ऐसा लगता है कि कुछ विधवाओं ने कलीसिया में सेवा के लिये अपना वचन दिया था, किंतु बाद में यौन इच्छाओं की गुलाम बन गईं (पद 11) और सेवा छोड़ दी।

"शैतान के पीछे"- परमेश्वर की इच्छा को तुच्छ जानकर, शारीरिक अभिलाषाओं के पीछे जाने से वे शैतान की सेवा कर रही थीं। इस संसार के आमोद-प्रमोद और दुष्टता के पीछे जाना अपने सब से बड़े शत्रु के पीछे जाना है। 1 इति. 21:1 और मत्ती 4:1-2 में शैतान पर नोट्स देखें।

5:16 जो महिलाएँ अपने सगे सम्बन्धियों में विधवाओं की सहायता करने के योग्य हैं, उन्हें दूसरे लोगों के समान ज़िम्मेदारी लेनी है। पद 4 और 8 से तुलना करें।

5:17 "दो गुने आदर"- अगला पद दिखाता है कि पौलुस का मतलब आर्थिक सहायता के साथ दूसरे प्रकार के सम्मान से भी है।

5:18 व्यव. 22:4; लूका 10:7; 1 कुरि. 9:9-12.

5:19 कभी-कभी मसीह का एक निर्दोष सेवक कुछ गलत कार्य के लिए या किसी और बात के लिये दोषी ठहराया जाता है। यदि दूसरे लोग इस बात पर विश्वास कर लें, तो उसकी सेवा प्रभावित हो सकती है। इसलिए पौलुस यहाँ पर बुद्धिमानी की सलाह देता है।

"दो या तीन"- व्यव. 19:15; मत्ती 18:16; 2 कुरि. 13:1.

5:20 चर्च की शुद्धता और पवित्रता बनाए रखने के लिये अनुशासन की आवश्यकता है, यदि पाप का सामना कर के सार्वजनिक रीति से डाँट न लगाई जाए तो वह मण्डली को नाश कर सकती है। प्रे.काम 5:1-11; 1 कुरि. 5:1-5,13; मत्ती 18:15-17. परमेश्वर के लोगों के मन में पाप के प्रति भय उत्पन्न करने के लिये सब के सामने उसका खुलासा करना चाहिये। हालांकि यह कार्य सावधानी से साथ करने के साथ-साथ दोषी व्यक्ति के प्रति परमेश्वरीय प्रेम को भूलना नहीं चाहिये।

5:21 यहाँ पौलुस कितना ज़ोर डालकर लिखता है। वह जानता था कि चर्च में पक्षपात करना एक आम बात है। बहुत से चर्च के अगुवे पाप करने वाले रिश्तेदारों और निकट के मित्रों के पाप को ढाँकने का प्रयत्न करते हैं। जब कि सामने लाकर डांटे जाने की ज़रूरत है। दूसरे लोगों के साथ वे बेरहमी का व्यवहार करते हैं। यह बिलकुल गलत है और इस से कलीसिया की हानि हो सकती है। पौलुस की सलाह को प्रत्येक मसीह के सेवक को मानना चाहिये।

पक्षपात से न करना।

22किसी पर जल्दी हाथ न रखना और दूसरों के गुनाहों में भागी न होना। अपने आपको पवित्र बनाए रखो।

23भविष्य में केवल पानी ही पीने वाले न रहो, पर अपने पेट के खराब होने और अपने बार-बार बीमार होने के कारण थोड़ा-थोड़ा अंगूर का रस (दाखरस) भी काम में लाया करो।

24कितने मनुष्यों के बुरे काम प्रगट हो जाते हैं, और इन्साफ़ के लिए पहले से पहुँच जाते हैं, लेकिन कुछ के साथ ऐसा नहीं होता, उनकी बुराई बाद में दिखती है। 25वैसे ही कितनों के भले काम भी दिखाई देते हैं, और जो ऐसे नहीं होते, वे भी छिप नहीं सकते।

6 जितने लोग गुलामी के बन्धन में हैं, वे अपने-अपने स्वामी को बड़े आदर के योग्य जानें, ताकि परमेश्वर के नाम और उपदेश की निन्दा न हो। 2और जिनके स्वामी विश्वासी हैं, इन्हें वे भाई होने के कारण तुच्छ न जानें, बल्कि उनकी और भी सेवा करें, क्योंकि जिनकी सेवा की जा रही है, वे यीशु को मानने वाले हैं और यीशु उन को चाहते हैं। इन बातों के बारे में उपदेश दिया करो और समझाते रहो।

3यदि कोई और ही तरह का उपदेश देता

5:22 "हाथ"- 4:14; 2 तीमु. 1:6. पौलुस शायद अगुवों और सेवकों की नियुक्ति के विषय कह रहा है। यदि बिना इन लोगों की नियुक्त अगुवों और सेवकों के रूप में की जाती है, जो कि पाप में जीवन बिता रहे हैं, तो नियुक्ति करने वाले ज़िम्मेदार होंगे। चर्च के अगुवों को स्वयं पवित्र जीवन जीने के साथ पवित्र जीवन जीने वालों को ही नियुक्त करना चाहिये।

5:23 "बार-बार बीमार होने के कारण"- विश्वासियों की बीमारी और स्वास्थ्य के विषय में बात करते समय इन पदों पर ध्यान दिया जाना चाहिये। 2 तीमु. 4:2; फ़िलि. 2:27; 2 कुरि. 12:7-10 से तुलना करें। यह संभव है कि तीमु. की शारीरिक समस्या अशुद्ध पानी पीने से थी। ऐसी स्थिति में थोड़ा सा अंगूर का रस मिलाकर पीना लाभकारी होता। उन दिनों पीने के पानी में थोड़ा सा पुराना अंगूर का रस मिलाना एक आम बात थी। यहाँ ध्यान दें शब्द 'थोड़ा' देखें 3:3,8; उत्पत्ति 9:21; नीति. 20:2; 23:30-31.

5:24-25 कभी-कभी लोगों के सामने न हमारे अच्छे कार्य और न बुरे कार्य दिखाई पड़ते हैं। कुछ समय के लिये मनुष्य छिपे पापों को या अच्छे कार्यों को किया करते हैं (भजन 9:8; सभो. 12:14; मत्ती 6:1-4)। इस कारणवश कलीसिया के अगुवों को अध्यक्ष या सेवक नियुक्त करते समय सावधानी बरतनी चाहिये। अन्त में जो कुछ लोग करते है, वह सब प्रगट किया जाएगा - मत्ती 10:26; लूका 8:17; 12:2-3; रोमि. 2:16; 1 कुरि. 4:5.

6:1 इफ़ि. 6:5-6 (नोट्स); कुल. 3:22; तीतुस 2:9; 1 पतर. 2:18.

"निन्दा"- यदि मसीही सेवक या गुलाम अपने मालिक या स्वामी के प्रति आदर न दिखाए, किंतु बलवा करें तो लोग सोच सकते हैं कि मसीही समाज में यह अनुमति है। इस प्रकार मसीही नौकरों द्वारा जिस परमेश्वर की आराधना की जाती है, उनकी निन्दा होगी।

6:2 यह संभव है कि वे मसीही गुलाम एवं सेवक जो अपने स्वामी को भला समझकर अपने काम में ढीले हो सकते हैं। किसी भी कार्य में किसी भी मसीही को ऐसा करना शोभा नहीं देता है। क्या गुलामों के लिये यह संभव है कि वे अपने स्वामी से प्रेम रखें? हाँ, मसीह में यह संभव है - गल. 3:28; कुल. 3:11. यूहन्ना 13:34 में मसीह की आज्ञा सभी विश्वासियों को सभी परिस्थितियों में प्रेम करने की दी गई थी।

"भाई"- जब एक स्वामी या नौकर (गुलाम) मसीह पर विश्वास लाता है, तो वह आत्मिक भाई है।

6:3-4 यदि कोई ....अनुसार है - 1,3,10,11; 4:1. यहाँ पौलुस उन लोगों के बारे में लिख रहा है जो मात्र नाम से मसीही कहलाते हैं, किंतु यह दूसरों पर भी लागू होता है। जिस सत्य को उसने प्रेरितों पर प्रगट किया था, उसी की ज़रूरत पर वह ज़ोर डाल रहा है। कुछ लोग कहते हैं कि उनकी बुद्धि और ज्ञान इन सिद्धान्तों पर उन्हें विश्वास करने से रोकता है। सच तो यह है कि जिस कारणवश लोग मसीह के सत्य को अस्वीकार करते हैं वह अधिक ज्ञान नहीं है, किंतु कम जानना है। वे अधिक शिक्षित हो

है, और खरी बातों को, अर्थात् हमारे प्रभु
यीशु मसीह की बातों को और उस उपदेश
को नहीं मानता, जिसमें सही चालचलन
की खास अहमियत है,, 4तो वह व्यक्ति
घमण्डी हो गया है, और कुछ नहीं जानता,
वरन् उसमें विवाद और शब्दों पर तर्क करने
का स्वभाव है। इस स्वभाव के कारण
डाह, और झगड़े, और निन्दा की बातें,
बुरे-बुरे सन्देह 5और उन लोगों में बेकार
के लड़ाई-झगड़े होने लगते हैं। ऐसे लोग
जिनकी बुद्धि बिगड़ गई है और सत्य से
खाली हो गए हैं, वे समझते हैं कि भक्ति
(मसीही सेवा) कमाई का तरीका है।

6लेकिन शान्ति (सन्तोष) के साथ
आत्मिक जीवन बड़ी कमाई है। 7क्योंकि
न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ
ले जा सकते हैं। 8यदि हमारे पास खाने
और पहनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष

सकते हैं, किंतु आत्मिक बातों में उनके पास कुछ समझ नहीं है। वे अंधकार और अज्ञानता में हैं - यूहन्ना 3:1,9,20; 1 कुरि. 1:18-22; 2 कुरि. 4:4; इफ़ि. 4:18. हालांकि उनके पास बुद्धि की शुरूआत ही नहीं है (नीति. 1:7), वे घमण्डी हैं और सोचते हैं कि बुद्धिमान हैं।

6:4 "तर्क करने का स्वभाव"- जो लोग आत्मिक रीति से रोगी हैं, पौलुस उनकी स्थिति के विषय में बता रहा है। परमेश्वर का वह सत्य जो उन्हें ठीक कर सकता है, उसे ग्रहण करने के बजाए वे सत्य के विरोध में लड़ने के लिये तैयार हो जाते हैं।

6:5 "बुद्धि बिगड़ गई है"- 2 तीमु. 3:8. एक मन जो परमेश्वर के सत्य का विरोध करता है, आत्मिक बातों के विषय में ठीक रीति से नहीं सोचता है। एक बड़ी आशीष, एक नया मन है, जो मसीह हमें देते हैं (रोमि. 12:2; कुल. 3:10)।

"सत्य से खाली"- सत्य उनके सामने था। उन्हों ने इस सत्य पर विश्वास किया। किंतु उन्हों ने शैतान को मौका दिया कि वह उनके मनों से सत्य को चुरा ले जाए। तुलना करें मत्ती 13:18-19.

ध्यान दें कि वे लोग जो मसीही कहलाते हैं, अपने भ्रष्ट मनों को प्रगट करते हैं - उनके लिये मसीही होने का दावा करना, दूसरों से धन प्राप्त करने का दूसरा कोई लाभ प्राप्त करने का साधन होता है। प्रे.काम 8:18-23; यूहन्ना 12:6; 2 पतर. 2:15; यहूदा 11. जो कुछ उनके पास है उसे मसीह के लिये छोड़ने के बजाए (लूका 14:25-27,33; फ़िलि. 3:8), वे मसीह के लोगों से जो कुछ प्राप्त कर सकते हैं, उसे लेना चाहते हैं। यह एक भयंकर बात है कि ऐसा मन मसीही कलीसियाओं और संस्थाओं के लोगों में होता है। कुछ लोग धन प्राप्त करने के लिये झूठ बोलते, चुराते हैं और धोखा देने के लिये भी तैयार हो जाते हैं। वे यह भूल गए हैं (यदि उन्हें कभी याद था) कि झूठा होने से बेहतर निर्धन होना है (नीति. 19:22)।

6:6 फ़िलि. 4:11-12; इब्रा. 13:5 । मसीह के विश्वासी को पहले भौतिक वस्तुओं में नहीं, किंतु आत्मिक बातों में धनी होना चाहिये। इसी में उनका अनन्तकालीन लाभ (मत्ती 6:19-21) है। परमेश्वर पर भरोसा रखने से संतोष मिलता है। सन्तुष्ट रहने का मार्ग यह है कि हम भरोसा करें कि परमेश्वर ने हमें सर्वोत्तम स्थान, पद और परिस्थिति में रखा है। उन्हों ने हमें वह सब दिया है, जिसकी हमें ज़रूरत है, न कम, न अधिक।

संतोष हमें शिकायत करने और लोभी इच्छाओं के (जो मूर्ति पूजा के बराबर है) पीछे जाने से बचाता है - इफ़ि. 5:5; कुल. 3:5. इस से हम भौतिक वस्तुओं के द्वारा नियंत्रित नहीं किये जाएँगे। परमेश्वर के जन के लिये संतोष एक आवश्यक तत्व है। संतोष नहीं रखना हमारे प्रति परमेश्वर के मार्गों और व्यवहार की आलोचना करता है। यह परमेश्वर के प्रति कुड़कुड़ाने के पाप की ओर ले जाता है (निर्ग. 14:11-12; 15:22-24; 16:2-3,8; गिनती 14:3)।

6:7 अय्यूब 1:21; भजन 49:16-20; सभो. 5:15 । पृथ्वी पर रहते समय हम जिन बातों को स्वर्ग भेजते हैं, वे ही हमारे लिये बचत हैं (मत्ती 6:19-26)।

6:8 पौलुस का अर्थ उन बातों से है जो जीवन के लिये सचमुच में ज़रूरी हैं। यहाँ वह अपने घर होने तक की बात नहीं करता है - संभवतः इसलिए कि इस पृथ्वी पर व्यक्ति सारे जीवन भर बिना घर के रह सकता है।

करना चाहिए। 9लेकिन जो अमीर होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुत सी बेकार की और नुकसानदायक वासनाओं में फँसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और बर्बादी के समुद्र में डुबा देती हैं। 10क्योंकि पैसों का लोभ सब तरह की बुराइयों की जड़ है, जिसे पाने की कोशिश करते हुए कई लोग विश्वास से भटक गए और अपने आप को तरह-तरह के दुखों से पीड़ित कर दिया है।

11परन्तु हे परमेश्वर के जन, तुम इन बातों से भागो और अच्छे चालचलन, आराधना के जीवन, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा करो। 12विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ो और उस अनन्त जीवन को थामे रहो, जिसके लिए तुम्हें बुलाया गया, और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था। 13मैं तुम्हें परमेश्वर के जो सब वस्तुओं को जीवन प्रदान करते हैं, और मसीह यीशु के सामने, जिन्होंने पुन्तियुस

6:9 लोग (यहाँ तक कि कुछ मसीही विश्वासी) सोच सकते हैं कि धन के पीछे दौड़ते चले जाना बुद्धिमानी है। किंतु ऐसे लोग सच में धोखे में हैं और सर्वनाश के रास्ते में हैं। धन की लालसा शैतान द्वारा लाया गया जाल है, एक परीक्षा जो हमें नाश करने के लिये है। यह इच्छा कभी भी संतोष नहीं लाती है। किंतु जैसे-जैसे वस्तुएँ बढ़ती जाती हैं, यह बढ़ती जाती है और अन्त में बर्बादी लाती है (मत्ती 7:13; 2 थिस्स. 1:8-9; भजन 49:20; 73:18-19)। इसके कुछ उदाहरण देखें - बालाम (2 पतर. 2:15), गेहज़ी (2 राजा 5:20-27), यहूदा (मत्ती 26:14-16; यूहन्ना 12:4-6)। क्या हम भी उन्हीं के समान नाश हो जाना चाहते हैं? यदि नहीं, तो उनके समान अपनी इच्छाओं को अपना जीवन वश में करने न दें।

6:10 धन का प्रेम सारी बुराइयों की जड़ है। क्योंकि यह परमेश्वर और आत्मिक बातों से हटाकर भौतिक बातों में लगा देता है। मत्ती 6:22-24. धन से प्रेम परमेश्वर से घृणा करना है। यदि हम मत्ती 22:37 में दी गई आज्ञा को मानें तो हमारे मन में धन के प्रति कोई स्थान नहीं होगा। दूसरी ओर, यदि हम धन के प्रेम को अपने ऊपर शासन करने देंगे, तो हमारे भीतर परमेश्वर के प्रति प्रेम के लिये कोई स्थान न होगा। अनेक बुराइयों में एक (सब से प्रमुख) दुष्टात्माओं के रूप में यहूदा इस्करियोती को भी धन के प्रेम ने गिराया (यूहन्ना 6:70-71; 12:6; मत्ती 26:14-16)।

"विश्वास से भटक गए"- पद 21; 1:19; 4:1; 5:8. जिन लोगों के लिये धन उनका परमेश्वर है, उन्हें मसीह के रास्ते को अपनाने की कोई इच्छा नहीं होगी। वे अपनी-अपनी राह ले लेंगे।

"दुखों से पीड़ित"- दौलत के पीछे भागना और दुख और क्लेश के पीछे जाना एक ही बात है। संपत्ति अपने प्रेमियों को दुख, असंतुष्टता, अनन्त हानि और बर्बादी देती है। याकूब 5:1-3; मत्ती 19:22; लूका 6:24-25; 12:16-21; और 16:19-31 देखें।

6:11 मसीही के प्रत्येक सेवक को धन संपत्ति लोभ की परीक्षा से भागना चाहिये। यदि ऐसा नहीं होता है तो वे शैतान के चंगुल में फँस जाएँगे (पद 9)। हम सभी अपनी पीठ उसकी ओर करें और उस धन संपत्ति की - परमेश्वर के आत्मा के फल (गल. 5:22-23) लालसा करें को जिसकी बात पौलुस करता है। यदि हम ऐसा करेंगे तो हमें जीवन की ज़रूरतों के विषय में परेशान नहीं होना पड़ेगा (मत्ती 6:23; फ़िलि. 4:19)। हमें संतोष भी मिलेगा।

6:12 "कुश्ती"- इफ़ि. 6:10-18; 1 कुरि. 9:26; 2 तीमु. 4:7.

"अनन्त जीवन"- पद 18; और 3:16 पर नोट्स देखें।

"थामे रहो"- अनन्त जीवन की आशीषें परमेश्वर ने हमारी पहुँच में रखी हैं और हमें उन्हें अपने लिए ले लेना चाहिए। सही मसीही जीवन सत्य जीवन है, बिना उद्देश्य का नहीं। परमेश्वर ने हमें मसीह में तमाम आशीषें दी हैं (इफ़ि. 1:3)। ज़रूर है कि हम उन्हें जानें, ले लें और लाभ उठाएँ।

"अच्छा अंगीकार"- मत्ती 10:32-33; रोमि. 10:9-10; 1 यूहन्ना 4:15 से तुलना करें।

6:13 5:21.

"जीवन प्रदान करते हैं"- प्रे.काम 17:25.

पिलातुस के सामने अच्छा अंगीकार किया,
यह हुक्म देता हूँ, 14कि तुम हमारे स्वामी
यीशु मसीह के आने तक इस आज्ञा को
निष्कलंक और निर्दोष रखो। 15इसे वह
ठीक समयों में दिखाएँगे, जो परमधन्य
और एक मात्र शासक और राजाओं के
राजा, और अधिकारियों के अधिकारी हैं।
16और अमरता केवल उन्हीं की है, और
वह ऐसी रोशनी में रहते हैं, जिन तक कोई
भी नहीं पहुँच सकता, न उन्हें किसी इन्सान
ने देखा है, और न कभी देख सकता है।
उनका मान-सम्मान और राज्य युगानुयुग
रहेगा। ऐसा ही हो।

17इस संसार के धनवानों को आज्ञा दो,
कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर
आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर आशा
रखें, जो हमारे सुख के लिए सब कुछ
बहुतायत से देते हैं। 18वे भलाई करें, और
भले कामों में अमीर बनें। साथ ही साथ
देने के लिए तैयार और सहायता करने में
आगे हों; 19इस तरह से भविष्य के लिये वे
अपना खज़ाना इकट्ठा करेंगे, जो कि एक
मज़बूत बुनियाद होगी, ताकि वे असली
ज़िन्दगी का स्वाद ले सकें।

"पिलातुस"- मत्ती 27:2. यूहन्ना 18:36-37 में मसीह द्वारा दिए गए अंगीकार को देखें।

6:14 "यीशु...आने"- यीशु मसीह के दोबारा आने (2 तीमु. 4:1,8; तीतुस 2:13; इब्रा. 9:28; मत्ती 24:30-31; प्रे.काम 1:11)।

"आज्ञा"- शायद पौलुस का अर्थ उस संपूर्ण जीवन से है जिसे प्रभु ने शिष्यों के लिए नियुक्त किया है। निश्चित रीति से 11,12 पद में वही विषय है।

6:15 "ठीक समय"- मत्ती 24:36. तुलना करें गल. 4:4; यूहन्ना 7:30. जो कुछ भी परमेश्वर करते हैं, उसके लिए उनके पास एक समय है। यहाँ पौलुस परमेश्वर को एक "सारी सृष्टि का शासक, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु कहता है।" प्रका. 1:7 में लिखा है कि प्रभु यीशु पृथ्वी के राजाओं के अधिपति हैं और प्रका. 19:16 में उन्हें "राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु" कहा गया है। क्या यहाँ कोई विरोधाभास है? बिल्कुल नहीं। स्पष्ट बात यह है कि यीशु परमेश्वर हैं और दुनिया में देह रूप धारण कर आए। यूहन्ना 1:1,14; फ़िलि. 2:6 आदि पद देखें।

6:16 1:17 देखें.

"रोशनी"- 1 यूहन्ना 1:5; यूहन्ना 1:4-5.

6:17 यह संभव है कि धनी यह सोचने लगें कि उन्हें परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है। तुलना करें भजन 49:6; 73:3-12.

"चंचल धन"- नीति. 23:4-5; 28:20. जो कुछ परमेश्वर ने मनुष्य को प्राप्त करने के योग्य बनाया है, वह सब उस से ले सकते हैं। जो लोग परमेश्वर पर ध्यान नहीं देते, उनके साथ यही होना अच्छा है।

"सुख के लिए"- सभो. 2:24-26; प्रे. काम 14:17. जो कुछ परमेश्वर ने लोगों को दिया है, वह चाहते हैं कि वे उसका आनन्द उठाएँ। वह नहीं चाहते हैं कि वे उनका आनन्द उठाना बुरा समझें। इसका यह अर्थ नहीं कि जब दूसरे निर्धनता में हैं, हम अनाप शनाप पैसा उड़ाएँ। 2 कुरि. 8:13-14.

"बहुतायत से देते हैं"- 2 कुरि. 9:8; फ़िलि. 4:19. परमेश्वर कंजूस नहीं कि अपने पास रखे रहें। जो कुछ हम आँखों से देखते हैं, लोग या भौतिक वस्तुएँ, उन पर हमारी आशा और भरोसा नहीं होना चाहिए।

6:18-19 मत्ती 19:21; 6:19-20; लूका 14:33; लूका 12:21.

"भले कामों में अमीर"- भले काम सच्चा आत्मिक धन हैं। तुलना करें मत्ती 25:19; लूका 19:15; 2 कुरि. 9:15. जो लोग अपना धन अपने ऊपर खर्च कर रहे हैं, वे सच पूछें तो फ़ेंक रहे हैं।

"उदार और सहायता देने में तत्पर"- अभी हम जो करते हैं, देते हैं, उन सब का हमारे अनन्त भविष्य पर प्रभाव है। मत्ती 25:19; लूका 19:15 इन वचनों से तुलना करें। यह बड़े दुख की बात है कि बहुत से लोग जो अपने धन से कुछ कर सकते थे, अपने लिए उपयोग करते हैं, या ऐसी बातों पर जिनका कुछ अनन्त मूल्य नहीं है। 2 कुरि. 9:15 में देने के विषय पर कुछ पद देखें।

20हे तीमुथियुस, जो शिक्षा तुम्हें सौंपी
गयी है, उसकी रखवाली करो, और जिस
ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके
अशुद्ध बकवास और विरोध की बातों
से दूर रहो। 21बहुत से लोग इस ज्ञान
का अंगीकार करके, विश्वास से भटक
गए हैं। तुम पर असीम कृपा (अनुग्रह)
बनी रहे।

6:20 "उसकी रखवाली करो"- 2 तीमु. 2:14. परमेश्वर के वचन की जिन सच्चाइयों को परमेश्वर ने प्रगट किया, पौलुस उन बातों के विषय कह रहा है। उन बातों को उसे बहुत कीमती समझना चाहिए और देखना है, न शैतान और न कोई, उन्हें हम से ले ले।

"ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है"- पद 3,4; कुल. 2:8; 1 कुरि. 1:17-25.

6:21 "अंगीकार करके"- रोमि. 1:22 से तुलना करें। कुछ लोग दावा करते हैं कि वे बड़े बुद्धिमान हैं और उन्हें सुसमाचार की आवश्यकता नहीं है। वे बर्बादी की सीमा पर हैं।

"विश्वास से भटक गए हैं"- पद 14; 4:1.

"असीम कृपा"(अनुग्रह) - मसीह का सेवक केवल परमेश्वर की शर्तहीन कृपा से ही उन बातों को अपने जीवन में लागू कर सकता है जो इस पत्र में दी गई हैं।